

(देश देशान्तरों में प्रचलित, उच्च कोटि का आध्यात्मिक मासिक-पत्र)

वार्षिक मू० ३॥)

सन्देश नहीं मैं स्वर्ग लोक का लाई।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आई॥

एक अंक का ।)

सम्पादक—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, सहा० सम्पादक—प्रो० रामचरण महेन्द्र एम० ए०

वर्ष ९] मथुरा, १ जुलाई सन् १९४८ ई० [अंक ६

सर्व सिद्धि प्रदायिनी–गायत्री ।

नित्ये, नैमित्तिके, काम्ये, त्रितये तु परायणः ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इहलोके परत्र च ॥

नित्य, नैमित्तिक एवं अभीष्ट—इन तीनों ही की प्राप्ति कराने में गायत्री से महान इस लोक और परलोक में अन्य कोई नहीं है ।

अष्टांग योगसिद्धया च नरः प्राप्नोति यत्फलम् ।
तत्फलं सिद्धिं माप्नोति गायत्र्यात् जपेन वै ॥

पुरुष जिस फल एवं सिद्धि को अष्टांग योग सिद्धि से भी प्राप्त नहीं कर पाता वही फल गायत्री-मन्त्र के जाप से प्राप्त होता है ।

सर्व वेदोद्धृतः सारः मन्त्रोऽयं समुदाहृतः ।
ब्रह्मादेव्यादि गायत्री परमात्मा समीरितः ॥

यह गायत्री मंत्र समस्त वेदों का सार कहा गया है । गायत्री ही ब्रह्म आदि देवता है तथा गायत्री ही परमात्मा कही गई है ।

———

पुत्र एवं स्वर्ण घट की प्राप्ति

(श्री जोखूराम मिश्र विशारद, जमुनीपुर)

(१) प्रयाग जिले के छतौना ग्राम निवासी पं० देवनारायण जी देव भाषा के असाधारण विद्वान और गायत्री के अनन्य उपासक हैं। तीस वर्ष की आयु तक अध्ययन करने के उपरान्त उनने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। पत्नी बड़ी सुशील एवं पति परायण मिली। परन्तु विवाह के बहुत काल बीत जाने पर भी जब कोई सन्तान न हुई तो अपने को वन्ध्यात्व से कलंकित समझ कर दुखी रहने लगी। पं० जी ने उनकी इच्छा को जान कर सवालक्ष जप का अनुष्ठान किया। कुछ ही दिन में उनके एक प्रतिभावान मेधावी पुत्र हुआ जो आज कल देव भाषा की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने की तैयारी कर रहा है।

(२) प्रयाग के पास जमुनीपुर ग्राम में एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे। उनका नाम पं० राम निधि शास्त्री था। शास्त्री जी विद्या के भण्डार होते हुए भी अत्यन्त निर्धन थे, पर वे गायत्री की साधना में भक्ति पूर्वक निरत रहते थे। तपश्चर्या में उनका शरीर अस्थि पंजर मात्र रह गया था।

एक बार शास्त्री जी ने गायत्री के नवान्हिक पुरश्चरण का संकल्प किया। उन्होंने नौ दिन तक केवल जल पीकर ही साधना की, जब पुरश्चरण समाप्त हुआ तो अर्ध रात्रि को भगवती गायत्री ने बड़े दिव्य स्वरूप में उन्हें दर्शन किये और वर दिया कि तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। तुम्हारे इस घर में ही अमुक स्थान पर एक स्वर्णघट रखा हुआ है उसे निकाल कर अपनी दरिद्रता दूर करो। तुम्हें शीघ्र ही पुत्र भी प्राप्त होगा। यह कह कर गायत्री देवी अन्तर्ध्यान होगई। पं० जी ने स्वर्ण से भरा हुआ घड़ा निकाला और वे निर्धन से धन पति होगये। उनके घर एक गौर वर्ण पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम 'गायत्री प्रसाद' रखा गया।

गायत्री द्वारा प्राण रक्षा

(पं० प्रभुदयाल शर्मा 'सं० सनाढ्य-जीवन' इटावा)

मेरे बड़े पुत्र की स्त्री को कई वर्ष पूर्व कोई दुष्ट प्रेतात्मा लग गई थी। इससे उसे बड़ा कष्ट होता था। बार बार बेहोश हो जाती थी। उसे कभी प्रतीत होता था कि कोई उसका हाथ तोड़े डालता है, कभी मस्तक पर हथौड़े की चोटें मारता है। कभी हाथ पैरों को जलाये देता है। इसी प्रकार के कष्ट, मस्तक के दर्द आदि की पीड़ा उसके बालकों को भी होती थी। हम इससे बहुत दुखी थे। झाड़ फूंक दवा दारू के बहुत प्रयत्न किये पर कोई लाभ न हुआ।

अन्त में गायत्री का आश्रय लिया गया। गायत्री से अभिमंत्रित जल उन्हें पिलाया जाता, उसी से उनका मार्जन किया जाता, इस उपचार से उस दुखदायी व्यथा से छुटकारा मिला।

(२) मेरे ताऊ जी जो एक प्रसिद्ध वैद्य थे। वे एक बार दानापुर (पटना) गये हुए थे। स्नान करने के अनन्तर वे गायत्री का जप नित्य करते थे। वहां वे जप कर ही रहे थे कि उनके कान में एक दम शब्द हुआ कि 'जल्दी निकल ! मकान गिरता है। एक बार सुन कर भी वे पूजा में व्यस्त रहे, किन्तु फिर वही शब्द और भी जोर से हुआ। वे पास की खिड़की से कूद कर भागे, मुश्किल से कुछ कदम ही गये होंगे की मकान गिर पड़ा। वे बाल-बाल बच गये।

(३) एक बार हमारे चचेरे भाई का पुत्र बहुत बीमार था। बीमारी काबू से बाहर थी, सब प्रकार जब निराशा दीखने लगी तो बालक की माता दादी आदि घर के लोग उसकी मृत्यु की आशंका से बुरी तरह रोने लगे। इतने में ताऊजी आगये। उनने मृत्यु के मुख में अटके हुए बालक को गोदी में लेलिया और उसे लेकर एक घन्टे तक आंगन में चक्कर लगाते रहे तथा गायत्री का जप करते रहे। बालक पूर्ण स्वस्थ होगया और आज वह १२ वर्ष का है।



मथुरा १ जुलाई सन् १९४८ ई०

शास्त्रों और ऋषियों द्वारा गायत्री की महिमा।



ऋषयो वेद शास्त्राणि सर्वे चैव महर्षयः।
श्रद्धया हृदि गायत्रीं धारयन्ति स्तुवन्ति च॥

(ऋषयः) ऋषि लोग (वेद शास्त्राणि) वेद और शास्त्र (च) और (सर्वे महर्षयः) समस्त महर्षि (गायत्रीं) गायत्री को (श्रद्धया) श्रद्धा से (हृदि धारयन्ति) हृदय में धारण करते हैं (च) और (स्तुवन्ति) उसकी स्तुति करते हैं।

सत्य इतना स्पष्ट होता है कि उसके सम्बन्ध में प्रायः सभी विचार शील व्यक्तियों की सम्मति एक होती है। दो और दो मिल कर कितने होते हैं इस प्रश्न को कितने ही व्यक्तियों से पूछा जाय, सबका एक ही उत्तर होगा—चार। इस समय दिन है या रात ? इस प्रश्न का उत्तर सभी विचारवान् व्यक्ति एक ही देंगे, सूर्य निकल रहा होगा तो कहेंगे कि इस समय दिन है, सूर्य अस्त होगया होगा तो कहेंगे कि अब रात है। यह प्रश्न चाहे जितने व्यक्तियों से पूछा जाय यदि उनका मस्तिष्क स्वस्थ और परिपक्व दशा में है तो एक ही प्रकार के उत्तर मिलेंगे।

सत्यता से भरे हुए तथ्य इतने स्पष्ट होते हैं कि उनके संबंध में सभी को एक मत होना पड़ता है। अपनी कमजोरी के कारण कोई उन्हें कार्य रूप में परिणत करने में समर्थ भले ही न हो पर जहां तक मान्यता का प्रश्न है वहां तक प्रायः सभी विचारवान् व्यक्ति सहमत होजाते हैं। झूठा मनुष्य भी प्रत्यक्ष रूप से 'सत्य' की महत्ता से इनकार नहीं कर सकता, 'ईमानदारी' की श्रेष्ठता का खंडन करने का साहस चोर में भी नहीं होता। चुपचुप रूप से कोई, चाहे कुछ करे प्रत्यक्ष रूप से सचाई का विरोध नहीं कर सकता। कारण यह है कि सत्य की श्रेष्ठता सर्वोपरि है, उसमें अगर मगर भले ही जोड़ी जाय किन्तु स्पष्ट रूप से उसका विरोध नहीं होसकता। जब चोरों की यह बात है तो श्रेष्ठ व्यक्तियों का तो कहना ही क्या ? उन्हें तो सत्यता के तत्वों पर सहमत होना ही चाहिए। फिर ऋषि मुनि और सन्त महात्माओं के बारे में तो यह सूर्य की तरह स्पष्ट है कि वे लोग जिस बात को सत्य, उचित, आवश्यक एवं उपयोगी देखेंगे, उसके सम्बन्ध में एक मत होंगे ही।

गायत्री मंत्र की महत्ता एक ऐसी ही स्पष्ट सचाई है जिसके आगे सभी ऋषि मुनियों ने, सभी धर्म ग्रन्थों ने,समान रूप से मस्तक झुकाया है, एक स्वर से उसका गुणगान किया है, एक सम्मति से उसका महात्म्य वर्णन किया है। गायत्री की महिमा का वर्णन इतने महा पुरुषों ने, इतने आप्तग्रन्थों ने इतने विस्तार एवं स्पष्ट रूप से किया है कि उसके संबंध में किसी प्रकार का सन्देह रहने की गुंजायश नहीं बचती। आप्त पुरुषों की प्रणाली यह रही है कि वे पहले किसी बात को परीक्षा की कसौटी पर कसते हैं, उसका मंथन करते हैं, सूक्ष्म दृष्टि से उसके अदृष्ट एवं दूरवर्ती भावी परिणामों पर विचार करते हैं, अपने अनुभव में लाते हैं, तब किसी बात का प्रकाश करते हैं। गायत्री को इन सब कसौटियों पर कसा गया है और जब देखा गया कि यह

महिमा मय तत्व एक उच्चकोटि का रत्न भण्डार है तब उसका सर्व साधारण के लिए प्रकाश किया गया है।

उसका साधारण प्रकाश नहीं किया गया है वरन् इतना महत्व पूर्ण समझा गया है कि प्रति दिन, नित्य, बिना नागा केवल एक बार नहीं अनेक बार, उसको अपनाने का आग्रह पूर्ण आदेश किया गया है। हम देखते हैं कि सन्ध्या बन्दन को धर्म शास्त्रों ने इतना ही आवश्यक माना है जितना कि भोजन, निद्रा, स्नान आदि नित्यकर्मों को माना गया है। संध्या करना आवश्यक है, लाभप्रद है, अनिवार्य है इन तथ्यों को मनुष्य के मस्तिष्क पर जमाने के लिए अनेकों विधि वचन धर्म ग्रन्थों में मिलते हैं। ऐसे असंख्यों श्लोकों, मंत्रों, सूत्रों एवं आदेशों से हमारे आर्ष ग्रन्थ भरे पड़े हैं, उनमें अनेक प्रकार से यह कहा गया है कि सन्ध्या करना आवश्यक है। संध्या को प्रातः मध्यान्ह, सायंकाल तीनबार करने का विधान है, पर प्रातः सायं दो बार या कम से कम एक बार प्रातःकाल करना तो अनिवार्य जैसा बताया है। सन्ध्या की अनेकों पद्धतियां प्रचलित हैं, ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय, सामवेदीय संध्याऐं प्रसिद्ध हैं। सनातन धर्मावलम्बियों की संध्याऐं तथा आर्य समाजियों की संध्याऐं प्रथक हैं। इन सभी सन्ध्याओं में अन्य प्रकार के अन्तर भले ही हों पर गायत्री मंत्र सबमें अवश्य होगा। बिना गायत्री के संध्या हो ही नहीं सकती। इस अनिवार्यता में एक बात स्पष्ट है कि गायत्री को हर हालत में प्रतिदिन कई कई वेलाओं में, अनेक बार जपना, अनेक बार हृदयंगम करना आवश्यक है। इस विधान पर विचार करने से सहज ही पता चल जाता है कि गायत्री के अन्तर्गत कोई ऐसे तत्व हैं जिनकी हमारे आन्तरिक शरीर को उतनी ही आवश्यकता है जितनी भोजन की। भोजन भी तीन बार तक किया जाता है, गायत्री की आवश्यकता भी तीन बार है। कोई कोई निर्बल, वृद्ध या रोगी उदर की कमजोरी के कारण एक बार भोजन करना ही काफी समझते हैं, इसी प्रकार अध्यात्मिक निर्बलता वाले व्यक्ति रुचि मंदता के कारण एक वेला में ही गायत्री जपते हैं। जिस प्रकार भोजन को अनेक ग्रासों में बार बार खाया जाता है उसी प्रकार गायत्री को भी अमुक संख्या में बार बार दुहराया जाता है।

गायत्री भोजन जैसी उपयोगी इसलिए है कि उसमें आत्मिक बल का केन्द्र है। बुद्धि की शुद्धि, उदर शुद्धि से भी अधिक आवश्यक है। पेट में मल भरे हों विषैले पदार्थ जमा हों तो शरीर का स्वास्थ्य दिन क्षीण होता जायगा भले ही कीमती भोजनों को खाता जाता रहे। इसी प्रकार यदि बुद्धि अशुद्ध है विकृत है, नीच तत्वों में लिप्त है तो उस बुद्धि से आत्म कल्याण नहीं होसकता, सुख शान्ति का दर्शन नहीं होसकता, चाहे कोई कितना ही बड़ा, कितना ही मूल्यवान् कर्मकाण्ड क्यों न करे। उदर की शुद्धि होने पर किया हुआ भोजन शुद्ध रक्त बनाता है और बल वीर्य की वृद्धि करता है, इसी प्रकार शुद्ध बुद्धि से किये गये कार्य एवं विचार ही आत्मबल को बढ़ाने एवं आत्म कल्याण की ओर लेजाने वाले होते हैं। यदि किसी झरने के उद्गम में विष की खान हो तो उसका जल देखने में चाहे कितना ही शीतल, स्वच्छ, स्वादिष्ट क्यों न हो पर उसको पीने से अनिष्ट कर परिणाम ही उत्पन्न होगा, अशुद्धि बुद्धि का भी यही हाल है उससे चाहे कैसे ही चमत्कारी कार्य क्यों न कर दिखाये जांय, चाहे कितना ही धन, यश, वैभव इकट्ठा कर लिया जाय पर परिणाम बुरा ही होगा। इसलिए मूल केन्द्र को शुद्ध करना, अन्य सब कार्यों की अपेक्षा अधिक उपयोगी देखकर उसकी अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया है और गायत्री साधना को भोजन करने जैसा दैनिक कृत्य नियुक्त किया गया है।

सर्व साधारण के लिए यह आदेश किया गया है कि गायत्री को केवल एक विशेष साधना

समझ कर उसकी उपेक्षा न करो वरन् एक अनिवार्य नित्यकर्म समझ कर प्रतिदिन कई कई बार उसमें गर्भित तथ्य को अपने अन्तःकरण में धारण करो। बुद्धि की शुद्धि करना, उसे सात्विक बनाना, आत्म निर्माण का सर्व प्रथम कार्य है, गायत्री इसकी शिक्षा देती है और सफलता प्रदान करने का मार्ग बताती है। यह इतना बड़ा लाभ है जिसकी तुलना और किसी लाभ से नहीं हो सकती। बुद्धि की शुद्धता प्राप्त होने पर आत्मिक आनंदों का समुद्र उमड़ पड़ता है और साथ ही भौतिक जगत् में जो उन्नति होती है वह स्थायी, सुदृढ़ एवं प्रतिष्ठा युक्त होती है, उस समृद्धि को भोगने से मनुष्य को भोग का सच्चा आनन्द मिलता है। अशुद्ध बुद्धि से उपार्जित किये हुए भोग ऐसे हैं जैसे शरीर में बादी भर जाने से उसका फूल कर फफ्फस होजाना, ऐसे फूल कर फफ्फस हुए मनुष्य बाहर से चाहे कैसे ही मोटे दिखाई पड़ें पर भीतर से उनका वह मुटापा उनके लिए भार स्वरूप, कष्टदायी होता है। श्लीपद रोग में पैर मोटे हो जाते हैं, शोथ में शरीर सूज जाता है, जलोदर में पेट फूला रहता है, अण्डवृद्धि में अण्डकोण्ड बढ़ जाते हैं, यह सब बढ़ोतरी बाहर किसी नासमझ को सम्पत्ति भले ही दीखती हो पर भुक्तिभोगी जानता है कि यह बढ़ोतरी मेरे लिए कितनी विपत्ति है। यही बात अशुद्ध बुद्धि से एकत्रित हुई सम्पत्ति के बारे में है। उसे पाकर कोई आत्मा सुखी नहीं हो सकती, उससे तो विपत्ति, अशान्ति, एवं उद्विग्नता ही बढ़ती है। सुख तो उन भोगों से ही मिलेगा जो सबुद्धि से उपार्जित किये गये होंगे। गायत्री हमारी बुद्धि को शुद्ध करती है, इसलिए वह आत्मिक आनन्दों के अतिरिक्त सच्चे भौतिक सुखोंको भी देती है। इसीलिए उसे "भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी" कहा गया है। उससे भोग और योग दोनों की प्राप्ति होती है।

हमारे पूजनीय ऋषियों को, आर्ष ग्रन्थों के प्रणेताओं को, आत्म तत्वके सूक्ष्म दर्शी आचार्यों को जो बात लोक हित के लिए अधिक उत्तम प्रतीत हुई है उसका उन्होंने अधिक बल पूर्वक आदेश किया है। गायत्री को उन्होंने ऐसा ही पाया—इसलिए उन सबने एक मत से, एक स्वर से गायत्री का महत्व बताया है। साधना क्षेत्र में और किसी साधना का इतना सर्व सम्मत समर्थन नहीं हुआ जितना कि गायत्री का हुआ है अपने अपने ढंग से सभी ने उसका समर्थन किया है। आगे कुछ ऐसे ही अभिवचन दिये जाते हैं जिससे पाठक गायत्री के सम्बन्ध में आर्ष ग्रन्थों और आप्त पुरुषों का अभिमत जानसकें। ——

गायत्री की महिमा।

गायत्री की महिमा को वेद, शास्त्र पुराण सभी वर्णन करते हैं। अथर्ववेद में गायत्री की स्तुति की गई है जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, पशु, कीर्ति, धन, और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजा पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।

(अथर्वेद-१९-७१-१)

अथर्वेद में स्वयं वेद भगवान ने कहा है।

मेरे द्वारा स्तुति की गई, द्विजों को पवित्र करने वाली, वेदमाता गायत्री आयुः, प्राण, शक्ति, पशु, कीर्ति, धन, ब्रह्मतेज उन्हें प्रदान करे।

यथामधु च पुष्पेभ्यो घृतं दुग्धाद्रसात्पयः।
एवं हि सर्ववेदानां गायत्री सार मुच्यते॥

—व्यास

जिस प्रकार पुष्पों का सारभूत मधु, दूध का घृत, रसों का सार भूत दूध है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार है।

तदित्यृचः समो नास्ति मन्त्रो वेद चतुष्टये।
सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च
समानि कलया प्राहुर्मुनयो नतदित्यृचः ॥
--विश्वामित्रः।

गायत्री मन्त्र के समान मन्त्र चारों वेदों में नहीं है। सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप, गायत्री मन्त्र की एक कला के समान भी नहीं हैं ऐसा मुनि लोग कहते हैं।

गायत्री छन्दसां मातेति ॥ २ ॥
—महानारायणोपनिषद्। १५। १

गायत्री वेदों की माता अर्थात् आदि कारण है।

त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादम्पादमदूदुहत्।
तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापति ॥
मनु० अ० २।७७

परमेष्ठी प्रजापति ब्रह्माजी ने तीन ऋचा वाली गायत्री के तीनों चरणों को तीनों वेदों से सारभूत निकाला।

गायत्र्यास्तु परन्नास्ति शोधनं पापकर्मणाम्।
महाव्याहृति संयुक्तां प्रणवेन च संजपेत् ॥
सम्वर्त स्मृ० श्लो० २१८

पापको नाश करने में समर्थ गायत्री के समान अन्य कोई मन्त्र नहीं है, अतः प्रणव तथा महाव्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र का जाप करे।

नान्नतोय समं दानं न चाहिंसा परं तपः।
न सावित्री समं जाप्यं न व्याहृति समं हुतम् ॥
सूत संहिता यज्ञ वैभवखण्ड अ० ६।२०।

अन्न और जल के समान कोई भी दान, अहिंसा के समान तप, गायत्री के समान जप, व्याहृति के समान अग्निहोत्र, कोई भी नहीं है।

हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे।
तस्मत्तामभ्यसेन्नित्यं ब्राह्मणो हृदये शुचिः ॥

गायत्री देवी नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली है अतः नित्य ही द्विज पवित्र हृदय से गायत्री का अभ्यास करे अर्थात् जपे।

गायत्रीं चैव वेदांश्च तुलया समतोलयन्।
वेदा एकत्र सांगास्तु गायत्री चैकतः स्थिता ॥
योगी याज्ञवल्क्य

गायत्री और समस्त वेदों को तराजू से तोला गया षट्अङ्गों सहित वेद एक ओर रखे गये और गायत्री को एक ओर रखा गया।

सारभूतास्तु वेदानाँ गुह्योपनिषदो मताः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्रो व्याहृतयस्तथा ॥
योगी याज्ञ०

वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री और तीनों महाव्याहृतियां हैं।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह च पावनम् ॥

गायत्री वेदों की जननी है, गायत्री पापों को नाश करने वाली है। गायत्री से अन्य कोई पवित्र करने वाला मन्त्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं है।

तद्यथाग्निर्देवानां, ब्राह्मणो मनुष्याणां,
वसन्त ऋतूनामेवं गायत्री छन्दसाम् ॥
(गोपथ ब्राह्मण)

जिस प्रकार देवताओं में अग्नि, मनुष्यों में ब्राह्मण, ऋतुओं में वसन्त ऋतु श्रेष्ठ है, उसी प्रकार समस्त छन्दों में गायत्री छन्द श्रेष्ठ है।

अष्टादशसु विद्यासु मीमांसा अति गरीयसी
ततोऽपि तर्क शास्त्राणि पुराणं तेभ्य एव च।
ततोऽपि धर्मशास्त्राणि तेभ्यो गुर्वीश्रुति द्विज।
ततोऽप्युपनिषच्छ्रेष्ठा गायत्री च ततोऽधिका ॥
दुर्लभा सर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवा न्विता।
बृह. सं. भा.

अठारह विद्याओं में मीमांसा अत्यन्त श्रेष्ठ है,

मीमांसा से तर्कशास्त्र श्रेष्ठ है और तर्कशास्त्र से पुराण श्रेष्ठ है।

पुराणों से भी धर्मशास्त्र श्रेष्ठ हैं, हे द्विज! धर्मशास्त्रों से वेद श्रेष्ठ हैं, और वेदों से उपनिषद् श्रेष्ठ हैं, और उपनिषदों से गायत्रीमन्त्र अत्यधिक श्रेष्ठ है।

प्रणव युक्त यह गायत्री मन्त्र समस्त वेदों में दुर्लभ है।

नास्ति गंगा समं तीर्थं न देवाः केशवात्परः।
गायत्र्यास्तु परं जप्यं न भूतं न भविष्यति॥

वृ० यो० याज्ञ० अ० १०।२।७६

गंगाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है, केशव से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है। गायत्री मन्त्र के जप से श्रेष्ठ कोई जप न आज तक हुआ और न होगा।

सर्वेषां जप सूक्तानामृचाश्च यजुषां तथा।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः॥

वृ० पाराशर० स्मृति अ० ४।४।

समस्त जप सूक्तों में, ऋग्यजु सामवेदों में तथा एकाक्षरादि मन्त्रों में गायत्री मन्त्र का जप परम श्रेष्ठ है।

एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परन्तपाः।
सावित्र्यास्तु परन्नास्ति पावनं परमं स्मृतम्॥

मनु० स्मृति० अ० २।८३।

एकाक्षर अर्थात् 'ओ३म्' पर ब्रह्म है। प्राणायाम परम तप है। और गायत्री मन्त्र से बढ़कर पवित्र करने वाला कोई भी मन्त्र नहीं है।

गायत्र्या परमं नास्ति दिवि चेह च पावनम्।
हस्तत्राणप्रदा देवी पततां नरकार्णवे॥

शंख स्मृति अ० १२।२५

नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु या मन्त्र पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में भी नहीं है।

गायत्री चैव वेदाश्च ब्रह्मणा तोलिता पुरा
वेदेभ्यश्च चतुर्भ्यो गायत्र्यतिगरीयसी॥

वृ० पाराशर स्मृति० ५।१६

प्राचीन काल में ब्रह्माजी ने गायत्री को वेदों से तोला। परन्तु चारों वेदों से भी गायत्री का पल्ला भारी रहा।

सोमादित्यान्वयः सर्वे राघवाः कुरवस्तथा।
पठन्ति शुचयो नित्यं सावित्रीं परमां गतिम्।

महाभारत अनु० पर्व० अ० १५।७८

हे युधिष्ठिर! सम्पूर्ण चन्द्रवंशी, सूर्यवंशी, रघुवंशी तथा कुरुवंशी नित्य ही पवित्र होकर परमगति दायक गायत्री मन्त्र का जप करते हैं।

बहुना किमिहोक्तेन यथावत् साधु साधिता।
द्विजन्मानामियं विद्या सिद्धा कामदुधास्मृता॥

यहां पर अधिक कहने से क्या लाभ? अच्छी प्रकार सिद्ध की गई यह गायत्री विद्या द्विज जाति को कामधेनु कहा गया है।

सर्ववेदोद्धृतः सारो मंत्रोऽयं समुदाहृतः।
ब्रह्मादेव्यादि गायत्री परमात्मा समीरितः॥

यह गायत्री मंत्र समस्त वेदों का सार कहा गया। गायत्री ही ब्रह्मा आदि देवता है। गायत्री ही परमात्मा कही गई है।

या नित्या ब्रह्मगायत्री सैव गंगा न संशयः
सर्व तीर्थमयी गंगा तेन गंगा प्रकीर्तिता।

गायत्री तंत्र

गंगा सर्व तीर्थ मय होने से 'गंगा' कहलाती है। वह गंगा ब्रह्म गायत्री का ही रूप है।

सर्व शास्त्र मयीगीता गायत्री सैव निश्चिता।
गयातीर्थं च गोलोकं गायत्री रूपमद्भुतम्॥

गायत्री तंत्र

गीता में सब शास्त्र भरे हुए हैं। वह गीता निश्चय ही गायत्री रूप है। गया तीर्थ और गोलोक यह भी गायत्री के ही रूप हैं।

अशुचिर्वा शुचिर्वापिगच्छन् तिष्ठन् यथा तथा।
गायत्रीं प्रजपेद्धीमान् जपात् पापान्निवर्त्तते ॥

गायत्री तंत्र

अपवित्र हो अथवा पवित्र हो, चलता हो अथवा बैठा हो अथवा जिस भी स्थिति में हो, बुद्धिमान मनुष्य गायत्री का जप करता रहे। इस जप के द्वारा पापों से छुटकारा होता है।

मननात् पापतस्त्राति मननात् स्वर्ग मश्नुते।
मननात् मोक्ष माप्नोति चतुर्वर्ग मयोभवेत् ॥

गायत्री तंत्र

गायत्री का मनन करने से पाप छूटते हैं, स्वर्ग प्राप्त होता है और मुक्ति मिलती है। तथा चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) सिद्ध होते हैं।

गायत्रीं तु परित्यज्य अन्य मंत्रमुपासते।
सिद्धान्नं च परित्यज्य भिक्षामटति दुर्मति ॥

जो गायत्री को छोड़ कर दूसरे मंत्रों की उपासना करता है वह दुर्बुद्धि पुरुष पकाये हुए अन्न को छोड़ कर भिक्षा के लिए घूमने वाले पुरुष के समान है ॥४३॥

नित्यनैमित्तिके काम्ये तृतीये तप वर्धने।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इहलोकेपरत्र च ॥२॥

नित्य, नैमित्तिक, काम्य का सफलता तथा तप की वृद्धि के लिए इस लोक तथा परलोक में गायत्री से बढ़कर कोई नहीं है।

सावित्री जाप नित्तः स्वर्गमाप्नोति मानवः।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन स्नानः प्रयतमानसः।
गायत्रीं तु जपेद्भक्त्या सर्वपाप प्रणाशिनीम् ॥

शंख स्मृति

गायत्रीमन्त्र जानने वाला मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त करता है। इस कारण समस्त प्रयत्नों से स्नान कर स्थिर चित्त हो समस्त पाप नाश करने वाली गायत्री देवी का जाप करे।

गायत्री जप के लाभ।

गायत्री का जप करने से कितना महत्व पूर्ण लाभ होता है, इसका कुछ आभास निम्न लिखित थोड़े से प्रमाणों से जाना जा सकता है। ब्राह्मण के लिए तो इसे विशेष रूप से आवश्यक कहा है क्योंकि ब्राह्मणत्व का सम्पूर्ण आधार सद्बुद्धि पर निर्भर है। और वह सद्बुद्धि गायत्री में बताये हुए मार्ग पर चलने से मिलती है।

सर्वेषां वेदानां गुह्योपनिषत्सार भूतां ततो गायत्रीं जपेत्।

(छांदोग्य परिशिष्टम्)

गायत्री समस्त वेदों का और गुह्य उपनिषदों का सार है। इसलिए गायत्री मन्त्र का नित्य जप करे।

सर्ववेद सारभूता गायत्र्यास्तु समर्चना।
ब्रह्मादयोऽपि संध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च ॥

दे० भा० स्कं० १२ अ० १६।१५

गायत्री मन्त्र का आराधन समस्त वेदों का सारभूत है। ब्रह्मादि देवता भी सन्ध्या काल में गायत्री का ध्यान करते हैं और जप करते हैं।

गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ॥

दे० भा० स्कं० १२। अ० ८।९०।

गायत्री मात्र की उपासना करने वाला भी ब्राह्मण मोक्ष को प्राप्त होता है।

ऐहिकामुष्मिकं सर्वं गायत्री जपतो भवेत्।

अग्निपुराण—

गायत्री जपने वाले को सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुख प्राप्त हो जाते हैं।

योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणिवर्षाण्यतन्द्रितः।
सब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः स्वमूर्तिमान्॥
मनुस्मृति २।८२।

जो मनुष्य तीन वर्ष तक प्रति दिन गायत्री जपता है वह अवश्य ब्रह्म को प्राप्त करता है और वायु के समान स्वेच्छाचारी होता है।

कुर्यादन्यन्न वा कुर्यात् इति प्राह मनुः स्वयं।
अक्षय मोक्षमवाप्नोति, गायत्री मात्र जापनात्॥
शौनकः

इस प्रकार मनु जी ने स्वयं कहा है कि अन्य देवताओं की उपासना करे या न करे, केवल गायत्री के जप से द्विज अक्षय मोक्ष को प्राप्त होता है।

बहुना किमिहोक्तेन यथावत् साधु साधिता।
द्विजन्मानामियं विद्या सिद्धिः कामदुघास्मृता॥
(शारदायां)

यहां पर अधिक कहने से क्या? अच्छी प्रकार उपासना की गई गायत्री द्विजों के मनोरथ पूर्ण करने वाली कही गई है।

एतया ज्ञातया सर्वं वाङ्मयं विदितं भवेत्।
उपासितं भवेत्तेन विश्वं भुवन सप्तकम्॥
योगी याज्ञ०

गायत्री के जान लेने से समस्त विद्याओं का वेत्ता हो जाता है और उसने गायत्री की ही उपासना नहीं की अपितु सात लोकों की भी उपासना करली।

ओंकार पूर्विकास्तिस्रो गायत्रीं यश्च विन्दति।
चरितब्रह्मचर्यश्च स वै श्रोत्रिय उच्यते॥
यो० याज्ञ०

जो ब्रह्मचर्य पूर्वक ओंकार, महाव्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र का जप करता है वह श्रोत्रिय है।

एतदक्षरमेतां जपन् व्याहृति पूर्विकाम्।
सन्ध्ययोर्वेदविद्विप्रो वेद पुण्येन मुच्यते॥
मनुस्मृति अ० २।७८

जो ब्राह्मण दोनों सन्ध्याओंमें प्रणवव्याहृति पूर्वक गायत्री मन्त्र का जप करता है। वह वेदों के पढ़ने के फल को प्राप्त करता है।

गायत्रीं जपते यस्तु द्वौ कालौ ब्राह्मणः सदा।
असत्प्रतिगृहीतापि सयाति परमां गतिम्॥
अग्नि पुराण

जो ब्राह्मण सदा सायंकाल और प्रातःकाल गायत्री का जप करता है वह ब्राह्मण अयोग्य प्रतिगृह लेने पर भी परमागति को प्राप्त होता है।

सकृद्यादि जपेद्विद्वान् गायत्रीं परमाक्षरीम्।
तत्क्षणात् संभवेत्सिद्धिर्ब्रह्म सायुज्यमाप्नुयात्।
गायत्री पुरश्चरण-२८

श्रेष्ठ अक्षरों वाली गायत्री को विद्वान यदि एक बार भी जपै तो तत्क्षण सिद्धि होती है और वह ब्रह्म की सायुज्यता को प्राप्त करता है।

जप्येनैव तु संसिद्धयेत् ब्राह्मणो नात्र संशयः।
कुर्यादन्यन्नवा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते॥
मनु।८७

ब्राह्मण अन्य कुछ करे या न करे, परन्तु वह केवल गायत्री जप से ही सिद्धि पा सकता है।

कुर्यादन्यन्न वा कुर्यादनुष्ठानादिकं तथा।
गायत्री मात्र निष्ठस्तु कृतकृत्यो भवेद्द्विजः॥
गायत्री तन्त्र। ८

अन्य अनुष्ठानादिक करे या न करे, गायत्री मात्रकी उपासना करने वाला द्विज कृतकृत्य हो जाता है।

सन्ध्यासु चार्घ्यं दानं च गायत्री जपमेव च।
सहस्त्रित्रयं कुर्वन्सुरैः पूज्यो भवेन्मुने॥
गायत्री तन्त्र श्लो० ६

हे मुने! सन्ध्याकाल में सूर्य को अर्घ्यदान और तीन हजार नित्य गायत्री जपने मात्र से पुरुष देवताओं से भी पूजनीय हो जाता है।

यदक्षरैक संसिद्धेः स्पर्धते ब्राह्मणोत्तमः।
हरिशंकर कंजोत्थ सूर्यचन्द्र हुताशनैः ॥

गायत्रीपुर० ११

गायत्री के एक अक्षर की सिद्धि मात्र से हरिशंकर ब्रह्मा, सूर्य चन्द्र, अग्नि आदि देवता भी साधक से स्पर्धा करने लगते हैं।

दस साहस्रमभ्यस्ता गायत्री शोधिनी परा

लघु अत्रि संहिता

दस हजार जपी गई गायत्री परम शोधन करने वाली है।

सर्वेषामेव पापानां संकरे समुपस्थिते।
दशसाहस्रिकाभ्यासो गायत्र्याः शोधनंपरम् ॥

समस्त पापों को तथा संकटों को दस हजार गायत्री का जप नाश करके परम शुद्ध करने वाला है।

गायत्री मेव यो ज्ञात्वा सम्यगुच्चारयेत् पुनः।
इहामुत्र च पूज्योऽसौ ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ॥

व्यासः

जो गायत्री को सम्यक् जानकर उच्चारण करता है वह इस लोक में और परलोक में ब्रह्म की सायुज्यता प्राप्त करता है।

गायत्री से पाप और दुखों से निवृत्ति।



गायत्री को अपनाने से पापों, दुखों और कषाय कल्मषों का नाश होता है। पूर्व संचित कितने ही कुसंस्कारों की जड़ उखड़ जाती है, जिसके कारण उनके द्वारा भविष्य में उत्पन्न होने वाले दुखों से भी छुटकारा मिल जाता है। कुसंस्कार स्वयं एक प्रकार के पाप हैं। चाहे उनके द्वारा प्रत्यक्ष पाप क्रिया कोई बड़ी मात्रा में न हो सके तो भी वे अपने जहरीले धुयें से मानस लोक को गंदा करते रहते हैं और उस गंदगी के फलस्वरूप बुरे फलों का प्राप्त होना स्वाभाविक है। वे मानस पापों की निरन्तर सृष्टि करते रहते हैं और उस सृष्टि का बुरा फल होता ही है। गायत्री साधना से यह कुसंस्कार उखड़ जाते हैं जिससे उन विषवृक्षों का वन नष्ट होजाता है जो भविष्य में अपने लिए अथवा दूसरों के लिए घातक परिणामों को उपस्थित करता है।

अब केवल वे पाप रह जाते हैं जो पककर प्रारब्ध बन चुके हैं, और जिनको भुगते जाने का विधान प्रस्तुत होगया है। यह प्रारब्ध बने हुए भोग भी गायत्री साधक के लिए बड़े सरल हो जाते हैं। जेल के अधिकारी अपनी जेल में आये हुए क्रूर प्रकृति के कैदियों की अपेक्षा उन कैदियों से नरम व्यवहार करते हैं जिनका स्वभाव उत्तम, विनय युक्त एवं मधुर होता है। जब मनुष्य का स्वभाव बदल जाता है तो ईश्वर का दंड विधान भी अपेक्षाकृत नरम होजाता है। इसके अतिरिक्त सद्बुद्धि वाले व्यक्ति की सहन शक्ति बढ़ जाती है, वह ईश्वरीय दंडों को हँसते हँसते झेल लेता है और "भगवान मुझे शीघ्र शुद्ध कर रहे हैं" ऐसा सोचकर उस बुरी स्थिति में भी आनंदित रहता है।

दुखों का सीधा संबंध मन की मान्यता से है। धन का मिलना या नष्ट होना बाह्य दृष्टि से कुछ महत्व नहीं रखता। कागजों का एक बंडल या धातु के टुकड़ों का एक थैला अपने पास रहा या दूसरे के पास रहा इससे वैसे कोई विशेष बनता बिगड़ता नहीं पर, मन की मान्यता के

अनुसार इनकी प्राप्ति में सुख और हानि में दुख होता है। विरक्त पुरुषों की स्थिति इससे उलटी होती है, ये प्राप्ति में दुख और त्याग में आनन्द मानते हैं। इससे प्रकट है कि सुख दुख मान्यता से संबंध रखने वाला एक काल्पनिक तथ्य है। सद्बुद्धि वाले व्यक्ति की धारणायें बदल जाने से उसे वे आपत्तियां जिनमें पड़कर साधारण लोग भारी दुख अनुभव करते हैं उन्हें वैसा अनुभव नहीं होता। इस प्रकार उनके सब दुख वस्तुतः नष्ट होजाते हैं। भले ही दूसरों की दृष्टि में वे अभावग्रस्त या दुखी प्रतीत हों।

गायत्री साधना से सब पापों की और सब दुखों की निवृत्ति के अनेक प्रमाण मिलते हैं जिनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं—

ब्रह्म हत्यादि पापानि गुरूपि च लघूनि च।
नाशयत्यचिरेणैव गायत्री जापको द्विजः ॥

पद्मपु०

गायत्री जपने वालेको ब्रह्महत्यादि सभी पाप, छोटे हों, चाहें बड़े हों शीघ्र ही समस्त नष्ट हो जाते हैं।

गायत्री जपकृद्भक्त्या सर्व पापैः प्रमुच्यते।

पराशर

भक्ति पूर्वक गायत्री जपने वाला समस्त पापों से छूट जाता है।

सर्व पापानि नश्यन्ति गायत्री जपतो नृप!

भविष्य पुराण

गायत्री जपने वाला समस्त पापों से छूट जाता है।

गायत्र्यष्ट सहस्रं तु जापं कृत्वा स्थिते रवौ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो यदि न ब्रह्महा भवेत ॥

अत्रिस्मृति। ३-१५

सूर्य के समक्ष खड़े होकर यदि गायत्री का आठ हजार जप करे तो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। यदि वह ब्रह्महा अर्थात् ज्ञानी पुरुषों की निन्दा करने वाला न हो, तो।

सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत्त्रिकं द्विजः।
महतोप्येनसो मासात्त्वचे वाहिर्विमुच्यते ॥

मनुस्मृति० अ० २।७९

एकान्त स्थान में प्रणव, महाव्याहृति पूर्वक गायत्री का १००० एक हजार जप करने वाला द्विज बड़े से बड़े पाप से ऐसे छूट जाता है जैसे केंचुली से सर्प छूट जाता है।

जना यैस्तरति तानि तीर्थानि।

जिनसे पुरुषों के पाप दूर हो जाते हैं और वे इस संसार से तर जाते हैं उनको तीर्थ कहते 'गायत्री'—इन तीन अक्षरों में वही तीर्थ विद्यमान् हैं—ग = गङ्गा। य = यमुना। त्र = त्रिवेणी समझनी चाहिए।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वांगना गमः!
महानि पातकान्यानि, स्मरणान्नाशमाप्नुयात् ॥

गायत्री पु० २२।

गायत्री के स्मरण मात्र से ब्रह्म—हत्या सुरापान चोरी, गुरुस्त्री गमन आदि अन्य महा पातक भी नष्ट हो जाते हैं।

य एतां वेद गायत्रीं पुन्यांसर्वगुणान्विताम्।
तत्वेन भरतश्रेष्ठ! स लोके न प्रणश्यति ॥

महा भा० भीष्म प० अ० १४।१६।

हे युधिष्ठिर! जो मनुष्य तत्व पूर्वक सर्वगुण सम्पन्न पुण्य गायत्री को जान लेता है। वह संसार में दुखित नहीं होता है।

गायत्री निरतं हव्य कव्येषु विनियोजयेत्।
तस्मिन्न तिष्ठते पापमब्बिंदु रिव पुष्करे ॥

गायत्री जपने वाले को ही पितृकार्य तथा देवकार्य में बुलाना चाहिए, क्योंकि गायत्री उपासक में पाप उस प्रकार नहीं रहता जैसे कमल के पत्ते पर पानी की बूंद नहीं ठहरती।

गायत्रीम पठेद्विप्रो न स पापेनलिप्यते।

लघु अत्रि संहिता

जो द्विज गायत्री को जपता है वह पाप से मुक्त नहीं होता ।

चरक संहिता में गायत्री साधना के साथ आंवला सेवन करने से दीर्घजीवन का वर्णन किया है ।

सावित्रीं मनसा ध्यायन् ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
सम्वत्सरान्ते पौषीं वा माघीं वा फाल्गुनीं तिथिम्

चरक चिकित्सा० आंव० रसा० श्लो० ६

मन से गायत्री का ब्रह्मचर्य पूर्वक एक वर्ष तक ध्यान करता हुआ वर्ष के उपरान्त में पौष मास अथवा माघ मास की अथवा फाल्गुन मास की किसी शुभ तिथि में तीन दिन क्रमशः उपवास कर उपरान्त आंवले के वृक्ष पर चढ़ जितने आंवले मनुष्य खायगा उतने ही वर्ष जीवित रहेगा ।

यदिहवा अप्येवं विद्वद्विव प्रतिगृह्णाति न हैव तद् गायत्र्या एकं च न पदं प्रति । स य इमांस्त्रीं ल्लोकान् पूर्णान् प्रतिगृह्णीयात् सोऽस्या एतत्प्रथमं पदमवाप्नुयादथ यावतीयं त्रयी विद्या यस्तावत्प्रति गृह्णीयात् सोऽस्या एतत् द्वितीय पदमवाप्नुयादथ यावदिदं प्राणि यस्तावत् प्रतिगृह्णयात् सोऽस्याः एतत्तृतीयं पदमवाप्नुयात् अथास्याः एतदेव तुरीयं दर्शनं पदं परोरजाय एष तपतिनैव केनचनाप्यं कुत उ एतावत्प्रतिगृह्णीयात् ।

बृ० ५।१४।५-६

गायत्री को सर्वात्मक भाव से जपने वाला मनुष्य यदि बहुत ही प्रतिग्रह लेता है तो भी उस प्रतिग्रह का दोष गायत्री के प्रथम पाद उच्चारण के समान भी नहीं होता है । यदि समस्त तीनों लोकों को प्रतिग्रह में लेवे तो उसका दोष प्रथम पाद उच्चारण से नष्ट हो जाता है । यदि तीनों वेदों का प्रतिग्रह लेवे तो उसका दोष द्वितीय पाद में नष्ट हो जाता है । यदि संसार के समस्त प्राणियों को भी प्रतिग्रह में लेवे तो उसका दोष तृतीय पाद में नाश हो जाता है, अतः गायत्री जपने वाले को कोई हानि नहीं पहुंचती, और गायत्री को चौथा पाद तो चौथा पर ब्रह्म है, इसके सदृश दुनियां में कुछ भी नहीं है ।

यदह्नात्कुरुते पापं तदह्नात्प्रतिमुच्यते ।
यद्रात्रियात्कुरुते पापं तद्रात्रियात्प्रतिमुच्यते ॥

तै० आ० प्र० १० अ० ३४

हे गायत्री देवि ! तुम्हारे प्रभाव से दिन में किये पाप दिन में ही नष्ट हो जाते हैं और रात्रि में किये पाप रात्रि में ही नाश हो जाते हैं ।

गायत्रीं तु परित्यज्य येऽन्य मन्त्रमुपासते ।
मुण्डकरा वै ते ज्ञेया इतिवेदविदो विदुः ॥

जो गायत्री मन्त्र को त्याग अन्य मन्त्र की उपासना करते हैं वे नास्तिक हैं ऐसा वेदवेत्ताओं ने कहा है ।

गायत्रीं चिन्तयेद्यस्तु हृद्पद्मे समुपस्थिताम् ।
धर्माधर्म विनिर्मुक्तः स याति परमां गतिम् ॥

जो मनुष्य हृदय कमल में बैठी गायत्री का चिन्तन करता है, वह धर्म, अधर्म, के द्वन्द्व से छूट कर परम गति को प्राप्त होता है ।

सहस्र जप्ता सा देवी ह्युपपातक नाशिनी ।
लक्ष्य जाप्ये तथा तच्च महापातकनाशिनी ॥
कोटि जाप्येन राजेन्द्र ! यदिच्छतितदाप्नुयात् ।

एक सहस्र जप करने से देवी उपपातकों का विनाश करती है एक लाख जप करने से महापातकों का विनाश होता है । एक करोड़ जाप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति होती है ।

गायत्री उपेक्षा की भर्त्सना।

गायत्री को न जानने वाले अथवा जानने पर भी उसकी उपासना न करने वाले द्विजों की शास्त्रकारों ने कड़ी भर्त्सना की है और उन्हें अधोगामी बताया है। इस निन्दा में इस बात की चेतावनी है कि जो आलस्य या अश्रद्धा के कारण गायत्री साधना में ढील करते हों उन्हें सावधान होकर इस श्रेष्ठ उपासना में प्रवृत्त होना चाहिए।

गायत्र्युपासना नित्या सर्ववेदैः समीरिता।
यस्या विनात्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा॥
देवी भागवते स्कंध १२। अ० ८।८

गायत्री की उपासना नित्य ही समस्त वेदों में वर्णित है। जिस गायत्री के बिना सर्व प्रकार से ब्राह्मण की अधोगति होती है॥

सांगाश्च चतुरो वेदानधीत्यापि सवाङ्मयान्।
सावित्रीं यो न जानाति वृथा तस्यपारश्रमः॥
यो० याज्ञवल्क्य०

सस्वर और साङ्गपूर्वक चारों वेदों को जानकर जो गायत्री मन्त्र को नहीं जानता, उसका परिश्रम व्यर्थ है।

गायत्रीं यः परित्यज्य चान्यमन्त्रमुपासते।
न साफल्यमवाप्नोति कल्पकोटि शतैरपि॥
बृ० सन्ध्या भाष्ये

जो गायत्री मन्त्र को छोड़ अन्य मन्त्र की उपासना करता है, वह करोड़ों जन्मों में भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है।

विहाय तां तु गायत्रीं विष्णूपास्ति परायणाः।
शिवोपास्तिरतो विप्रो नरकं याति सर्वथा॥
देवी भागवत

गायत्री को त्याग कर विष्णु और शिव की पूजा करने पर भी ब्राह्मण नरक में जाता है।

गायत्री रहितो विप्रः शूद्रादप्य शुचिर्भवेत्।
गायत्री ब्रह्म तत्वज्ञः सम्पूज्यस्तु द्विजोत्तमः॥

गायत्री से रहित ब्राह्मण शूद्र से भी अपवित्र है। गायत्री रूपी ब्रह्म तत्व को जानने वाला द्विज सर्वत्र पूज्य है।

एतच्चर्या विसंयुक्त काले च क्रियया स्वया।
ब्रह्मक्षत्रिय विद्योनिर्गर्हणां याति साधुषु॥
मनु स्मृति अ० २।८०

प्रणव व्याहृति पूर्वक गायत्री मन्त्र का जप सन्ध्या काल में न करने वाला द्विज सज्जनों में निन्दा का पात्र होता है।

एवं यस्तु विजानाति गायत्रीं ब्राह्मणस्तुसः।
अन्यथा शूद्र धर्मस्याद्वेदानामपि पारगः॥
यो० याज्ञ०

जो गायत्री को जानता है और जपता है वह ब्राह्मण है अन्यथा वेदों में पारङ्गत होने पर भी शूद्र के समान है।

अज्ञात्वा चैव गायत्रीं ब्राह्मण्यादेव हीयते।
अपवादेन संयुक्तो भवेच्छ्रुतिनिदर्शनात्॥
यो० प०

गायत्री को न जानने से ब्राह्मण ब्राह्मणत्व से हीन हो पाप युक्त हो जाता है ऐसा श्रुति में कहा गया है।

किं वेदैः पठितैः सर्वैः सेतिहास पुराणकैः।
सांगैः सावित्र हीनेन न विप्रत्वमवाप्नुयात्॥
बृ० पराशर० अ० ५।१४

सेतिहास पुराणों के तथा समस्त वेदों के पढ़ लेने पर भी यदि ब्राह्मण गायत्री मन्त्र से हीन हो तो वह ब्राह्मणत्व को नहीं प्राप्त होता है।

न ब्राह्मणो वेदपाठान्न शास्त्र पठनादपि ।
देव्यास्त्रिकालमभ्यासाद्ब्राह्मणः स्याद्द्विजोऽन्यथा

बृ० सन्ध्या भाष्ये।

वेद और शास्त्रों के पढ़ने से भी ब्राह्मण नहीं हो सकता है। तीनों काल में गायत्री की उपासना से ही ब्राह्मण होता है अन्यथा वह द्विज ही रहता है।

गायत्री के संबंध में महापुरुषों के अभिमत।

भारत वर्ष के प्रसिद्ध महापुरुषों ने वेदमाता गायत्री के संबंध में समय समय पर अपनी श्रेष्ठ तम सद्भावनाएं प्रकट की हैं। उन श्रद्धाञ्जलियों को नीचे संकलित किया जारहा है। पाठक इन अभिमतों में प्रकट किये गये विचारों की महत्ता, और इस विचार प्रकट करने वालों की महानता का ध्यान रखते हुए विचार करें कि आधुनिक काल के महापुरुष भी वेदमाता गायत्री के प्रति उतनी ही उच्च श्रद्धा रखते हैं जितने कि प्राचीन काल में ऋषि मुनि करते थे। सचमुच गायत्री ऐसी ही महाशक्ति है जिसको हमें भी श्रद्धा पूर्वक हृदयंगम करना चाहिए।

महात्मा गान्धी।

"गायत्री के मंत्र का निरन्तर जप रोगियों को अच्छा करने के लिए इसका प्रयोग, प्रार्थना की परिभाषा को--आत्मा एक उन्नत अवस्था से दूसरी उन्नत अवस्था को पहुंचने के लिए आतुर हो रही है--सर्वथा चरितार्थ करता है। यदि इसी गायत्री मंत्र का जप अनवरत चित्त और शान्त हृदय से राष्ट्रीय आपत्ति काल में किया जाता है तो उन संकटों को मिटाने के लिए प्रभाव और पराक्रम दिखलाता है।"

"जिन लोगों का यह विश्वास है कि 'मंदिरों में जाकर गायत्री का जप करना, नमाज़ या प्रेयर करना मूर्खता या विडम्बना है' वे भ्रम में फँसे हुए हैं। मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि ऐसी मान्यता से बड़ी भूल मनुष्य से और कोई नहीं हो सकती।"

—यंगइंडिया

"मैं मानता हूं कि संस्कृत भाषा की बुरी तरह उपेक्षा की जारही है। मैं उस पीढ़ी का आदमी हूं जिसका प्राचीन भाषाओं की पढ़ाई में विश्वास था। जहां तक भारतवर्ष का सम्बन्ध है, यह बात किसी और प्राचीन भाषा की अपेक्षा संस्कृत पर अधिक लागू होती है। हर एक राष्ट्रवादी को संस्कृत पढ़नी चाहिए।

इसी भाषा में तो हमारे पूर्वजों के विचार और लेख है। यदि हिन्दू बच्चों को अपने धर्म की भावनायें हृदयंगम करानी हैं तो एक भी लड़के या लड़की को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किये बिना नहीं रहना चाहिए। देखिए, गायत्री का अनुवाद हो ही नहीं सकता। उसका एक खास अर्थ है। मूल मंत्र में जो संगीत है वह अनुवाद में कहां से आवेगा।"

—हरिजन सेवक

"वर्तमान चिकित्सा प्रणाली धर्म से सर्वथा शून्य है जो व्यक्ति उचित रूप से प्रति दिन नमाज पढ़ता है या गायत्री का जाप करता है, वह कभी रोग ग्रसित नहीं होसकता एक पवित्र आत्मा ही पवित्र शरीर बना सकता है। मेरा दृढ़ निश्चय है कि धार्मिक जीवन के नियम आत्मा और शरीर दोनों की यथार्थ रूप से रक्षा कर सकते हैं।"

त्रिविया कालेज में भाषण

श्री जगद्गुरु शंकराचार्य जी

"गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। बुद्धि का शुद्ध होना इतना बड़ा कार्य है जिसकी समता संसार के

और किसी काम से नहीं हो सकती। आभा प्राप्ति करने की दिव्य दृष्टि जिस शुद्ध बुद्धि से प्राप्त होती है उसकी प्रेरणा गायत्री द्वारा होती है। गायत्री आदि मंत्र है। उसका अवतार दुरितों को नष्ट करने और ऋत के अभिवर्धन के लिए हुआ है।

महर्षि रमण

"योग विद्या के अन्तर्गत मंत्र विद्या बड़ी प्रबल है। मंत्रों की शक्ति से बड़ी अद्भुत सफलतायें मिलती हैं। मंत्र शक्ति से जादू जैसे चमत्कारों से भारतीय जनता भली प्रकार परिचित है। गायत्री मंत्र ऐसा मंत्र है जिससे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार के लाभ मिलते हैं।"

महामना मालवीयजी

"महामना मालवीयजी गायत्री मंत्र के बड़े भक्त थे। हिन्दू विश्व-विद्यालय के लिए प्रयत्न करने से पूर्व उन्होंने प्रयाग में त्रिवेणी तट पर एक करोड़ गायत्री का पुरश्चरण करवाया था। उस तपस्या का फल आज सबके सामने प्रयत्न है। मालवीयजी नित्य एक हजार गायत्री का जप नियमित रूप से करते थे। गायत्री पुरश्चरण के अवसर पर उन्होंने अपने प्रवचन में कहा था"--

"ऋषियों ने जो अमूल्य रत्न हमें दिये हैं उनमें से एक अनुपम रत्न गायत्री है। गायत्री से बुद्धि पवित्र होती है। ईश्वर का प्रकाश आत्मा में आता है। इस प्रकाश में असंख्यों आत्माओं को भव बन्धन से त्राण मिला है। गायत्री में ईश्वर परायणता के भाव उत्पन्न करने की शक्ति है, साथ ही वह भौतिक अभावों को दूर रह करती। गायत्री की उपासना करना ब्राह्मणों के लिए तो अत्यन्त आवश्यक है। जो ब्राह्मण गायत्री जप नहीं करता वह अपने धर्म कर्तव्य को छोड़ने का अपराधी होता है।"

लोकमान्य तिलक

"भारतीय जनता आज अन्धकार में भटक रही है। उसका कल्याण केवल मत्र धन वृद्धि से ही न होजायगा। आर्थिक दशा सुधर जाने पर भी मनुष्य सुखी नहीं होसकता उसे आज ऐसे प्रकाश की आवश्यकता है जो उसकी आत्मा को प्रकाशित करदे। जिस बहुमुखी दासता के बन्धनों में आज प्रजा जकड़ी हुई है उनका अन्त राजनैतिक संघर्ष करने मात्र से नहीं हो जायगा। उसके लिए तो आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिए जिससे सत् और असत् का विवेक हो। कुमार्ग को छोड़ कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले। गायत्री मंत्र में यही भावना विद्यमान है। उसमें प्रकाश की कामना की गई है। अन्तःकरण में प्रज्वलित ज्ञान ज्योति ही हमारा पथ प्रदर्शन कर सकती है और उसी के पीछे अनुगमन करने से आज की विपन्न दशा से छुटकारा पाया जा सकता है।"

श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज

"प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर, नित्य कर्म से निवृत्त होकर गायत्री का जप करना चाहिए। ब्राह्म मुहूर्त में गायत्री का जप करने से चित्त शुद्ध होता है और हृदय में निर्मलता आती है। शरीर निरोग रहता है और स्वभाव में नम्रता आती है। बुद्धि सूक्ष्म होने से दूर दर्शिता बढ़ती है, और स्मरण शक्ति का विकाश होता है। कठिन प्रसंगों में गायत्री द्वारा दैवी सहायता मिलती है। उसके द्वारा आत्म दर्शन हो सकता है।"

स्वामी रामतीर्थ

"राम को प्राप्त करना सब से बड़ा काम है। गायत्री अभिप्राय बुद्धि को काम रुचि से हटाकर रामरुचि में लगा देना है। जिसकी बुद्धि पवित्र होगी वही राम को प्राप्त करने का काम कर

सकेगा। गायत्री पुकारती है कि—बुद्धि में इतनी पवित्रता होनी चाहिए कि वह काम को राम से बढ़ कर न समझे।"

श्री रामकृष्ण परमहंस।

"मैं लोगों से कहता हूं कि लम्बे लम्बे साधन करने की उतनी जरूरत नहीं है। इस छोटी सी गायत्री की साधना को करके देखो। गायत्री का जप करने से बड़ी बड़ी सिद्धियां मिल जाती हैं। यह मंत्र छोटा है पर इसकी शक्ति बड़ी भारी है।"

योगी अरविन्द घोष।

"पाण्डचेरी के योगिराज श्री अरविन्द घोष ने कई जगह गायत्री जप करने का निर्देश किया है। उन्होंने बताया है कि गायत्री में ऐसी शक्ति समायी हुई है जो महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है। उन्होंने कइयों को साधना के तौर पर गायत्री का जप बताया है।

श्री स्वामी विवेकानंदजी

"परमात्मा से क्या मांगना चाहिए? क्या वह वस्तुऐं मांगें जिन्हें अपने बाहुबल से आसानी के साथ कमाया जासकता है? नहीं, ऐसा उचित न होगा। बुहारी की आवश्यकता पड़ने पर उसे दो चार पैसे में बाजार से खरीद लिया जाता है। उसे कौन बुद्धिमान कहेगा जो बुहारी मांगने राजदरबार में जाये। राजा ऐसे मांगने पर हँसेगा और उसकी इस तुच्छ बुद्धि पर हँसेगा। राजा से वही वस्तु मांगी जानी चाहिए जो उसके गौरव के अनुकूल हो। परमात्मा से मांगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि है। जिस पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं उसे सद्बुद्धि प्रदान करते है। सद्बुद्धि से सत् मार्ग पर प्रगति होती है और सत्कर्म से सब प्रकार के सुख मिलते हैं। जो सत् को ओर बढ़ रहा है उसको किसी प्रकार के सुख की कमी नहीं रहती। गायत्री सद्बुद्धि का मंत्र है। इस लिए उसे मन्त्रों का मुकटमणि कहा गया है।"

श्री स्वामी करपात्रीजी

"जो गायत्री के अधिकारी हैं उन्हें नित्य नियमित रूप से गायत्री का जप करना चाहिए। द्विजों के लिए गायत्री का जप एक अत्यन्त आवश्यक धर्मकृत्य है।"

महात्मा उड़िया बाबा

"मैं जब आठ वर्ष का था तभी मुझे गायत्री मन्त्र की दीक्षा दीगई थी। मैंने श्रद्धा पूर्वक उसकी उपासना की और ईश्वर की ओर मेरी प्रवृत्ति बढ़ती गई।

मनुष्य शरीर में बुद्धि की प्रमुख स्थान है। गायत्री बुद्धि को पवित्र करती है। जब बुद्धि पवित्र होगई तो सब कुछ पवित्र होगया समझना चाहिए। जिसकी बुद्धि पवित्र है उसके लिए संसार में कुछ भी अप्राप्य नहीं है। गायत्री ब्राह्मणों का तो प्रधान आधार है।"

स्वा० कालीकमली वाले बाबा विशुद्धानंद

"गायत्री ने बहुतों को सुमार्ग पर लगाया है। कुमार्ग गामी पुरुष की पहले तो गायत्री की ओर रुचि ही नहीं होती। यदि ईश्वर कृपा से हो जाय तो वह कुमार्ग गामी नहीं रहता। गायत्री जिसके हृदय में वास करती है उसका मन ईश्वर की ओर जाता है। विषय विकारों की व्यर्थता उसे भली प्रकार अनुभव होने लगती है।

कई महात्मा गायत्री का जप करके परम सिद्ध हुए हैं। परमात्मा की शक्ति ही गायत्री है। जो गायत्री के निकट जाता है वह शुद्ध होकर रहता है। आत्मकल्याण के लिए मन की शुद्धि आवश्यक है। मन की शुद्धि के लिए गायत्री मन्त्र अद्भुत है। ईश्वर प्राप्ति के लिए गायत्री जप को प्रथम सीढ़ी समझना चाहिए।"

प्रसिद्ध आर्यसमाजी महात्मा सर्वदानंदजी।

"गायत्री मन्त्र द्वारा प्रभु का पूजन सदा से आर्यों की रीति रही है। ऋषि दयानंद ने भी उसी शैली का अनुसरण करके सन्ध्या का विधान, यथाशक्ति सार्थक व्याख्यान तथा वेदों के स्वाध्याय में प्रयत्न करना बतलाया है। ऐसा करने से अन्तःकरण की शुद्धि तथा निर्मल बुद्धि होकर मनुष्य जीवन अपने और दूसरों के लिए हितकर होजाता है। जितनी भी इस शुभ कर्म में श्रद्धा और विश्वास हो उतना ही अविद्या आदि क्लेशों का ह्रास होता है। फिर विद्या के प्रकाश में उपासना, प्रभु के आस पास हो जाता है। जो जिज्ञासु अर्थ पूर्वक इस मन्त्र का सप्रेम नियमपूर्वक उच्चारण करता है उसके लिए गायत्री संसार सागर संस्तरण की तरणि (नाव) और आत्म प्रसाद प्राप्ति की सरणि (सड़क) है।"

टी० सुब्बाराव

"सविता नारायण की दैवी प्रकृति को गायत्री कहते हैं। यह आदि शक्ति होने के कारण इसको गायत्री या आद्यशक्ति कहते हैं। गीता में आदित्य वर्ण कहकर इन्हीं का वर्णन किया गया है। ब्राह्म मुहूर्त में सन्ध्योपासन द्वारा गायत्री की उपासना करना योग का सबसे प्रथम अंग है जो राजयोग में परमावश्यक है।"

पुनीत गायत्री मंत्र।

(डा० रवीन्द्रनाथ टागोर)

भारतवर्ष को जगाने वाला जो मन्त्र है वह इतना सरल है कि एक ही श्वास में उसका उच्चारण किया जा सकता है वह है—गायत्री मन्त्र।

ॐ भूर्भुवः स्वः

गायत्री के इस अंश का नाम व्याहृति के अर्थ हैं चारों ओर से इकट्ठा करके ले आना। पहले भूः भुवः स्वः इन तीनों लोकों, अर्थात्—सारे जगत् को मनमें इकट्ठा करके लाना चाहिए। अर्थात् यह अनुभव करना चाहिए कि—

मैं किसी देश विशेष में रहने वाला नहीं हूं, परन्तु विश्व जगत का अधिवासी हूं। मैं जिस राजमहल का रहने वाला हूं, ये लोक लोकान्तर उसकी केवल एक-एक दीवार मात्र हैं।

इस प्रकार स्वास्थ्य चाहने वाला मनुष्य अपनी तंग और बंद कोठरी से बाहर निकलकर प्रतिदिन प्रातःकाल अपरिमित खुले मैदान में शुद्ध वायु सेवन के लिए जाता है, उसी प्रकार प्रति दिन असंख्य नक्षत्रों से सुजटित इस जगत् में खड़ा होकर इस मन्त्र उच्चारण करना चाहिए।

तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात् ॐ

यह सारा जगत जिस शक्ति से विकसित होरहा है उसी दिव्य ज्योति का हम ध्यान करते हैं। वह हमारी बुद्धियों का प्रेरक—चलाने वाला होवे।

ब्रह्म का ध्यान करने की भी यह प्राचीन पद्धति जैसी महान् उदार है, वैसे ही अत्यन्त सरल है। इसमें किसी प्रकार की व्यर्थता और बनावट का प्रवेश नहीं है।

बाह्य जगत और अन्तर बुद्धि—इन दोनों को छोड़कर हमारे पास है ही क्या ? इस जगत और भी को भगवान अपनी अथक शक्ति से दिन रात प्रेरणा दे रहे हैं। इसी बात को अनुभव कर लेने से भगवान के साथ हमारा सम्बन्ध चिर-स्थायी किया जा सकता है। मैं नहीं जानता

कि किसी अन्य हुनर मन्दी सामग्री कृत्रिम साधन अथवा मानसिक विचारोद्वेग से होना असम्भव है।

इस पुनीत मंत्र के अभ्यास में अन्य किसी प्रकार का तार्किक ऊहपोह, किसी प्रकार के मतभेद अथवा किसी प्रकार के बखेड़े की गुंजायश नहीं और न इसके अन्दर कोई विशेष व्यक्तिगत अथवा संकीर्णता पाई जाती है।

जीवनदात्री गायत्री

—सर एस० राधाकृष्णन्—

यदि हम इस सार्व भौमिक प्रार्थना गायत्री पर विचार करें तो हमें मालूम होगा कि यह हमें वास्तव में कितना ठोस लाभ देती है। गायत्री हम में फिर से जीवन का स्रोत उत्पन्न करने वाली आकुल प्रार्थना है। यह एक खोज है। साहसिक अनुसन्धान है। धार्मिक जीवन या खोज से इसका जितना सम्बन्ध है उस सम्बन्ध में इसे अन्तिम नहीं कहा जा सकता। फिलस्फर या दार्शनिक शब्द का अर्थ सचाई को सिखाने वाला नहीं है वह तो मार्ग दर्शन के लिए किसी एक के साथ सचाई की खोज है। यह जन समूह में बैठकर नहीं की जाती। यह तो अलग अलग अपने अन्तस्तल में प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं मौन शान्त और एकान्त होकर करनी होती है। अन्तर्नाद की पुस्तक—बाइबिल—में एक स्थान पर कहा गया है—जब फरिश्ते खुदा के सामने आये, आध घण्टे तक सब शान्त रहे। यह मौन-शान्ति भाव यदि फरिश्तों के लिए आवश्यक है तो मनुष्य के लिए तो इसकी और भी आवश्यकता है। उसमें भी पूरी ईमानदारी और पूरी सचाई चाहिए। ध्यान तो केवल साक्षात्कार है—अपनी आत्मा के साथ। इसी में तो हम अपनी आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को—सम्बन्ध कराने वाली गांठ को देख सकते हैं। गायत्री चाहती है कि हम लगातार इस खोज को जारी रखें।

गायत्री जप की महिमा।

श्री स्वामी दयानन्द के जीवन में—

श्री स्वामी जी महाराज के जीवन-चरित्र (उर्दू) प्रथम संस्करण (*Edition*) बड़ी (*Size*) आकृति से उद्धृत।

इस गायत्री जप को स्मृतिकारों से ही इतना महत्व दिया गया है, यह बात नहीं वर्तमान युग के विद्या और बुद्धि पर आश्रित (*Rationaclistic*) धर्म के प्रचारक महर्षि दयानन्द भी इस गायत्री जप के महत्व को स्वीकार करते हैं। ग्वालियर में भागवत-सप्ताह मनाये जाने के अवसर पर राजाजी की ओर से स्वामीजी से इस के माहात्म्य को पूछा गया तो स्वामी जी ने उत्तर दिया।

गायत्री पुरश्चरण करना चाहिये।

जयपुर रियासत में सच्चिदानन्द को स्वामी जी ने ईश्वर उपासना के मन्त्र का उपदेश दे रखा था इसलिए वह सायंकाल सूर्याभिमुख होकर उस मन्त्र का जप किया करता था यह मन्त्र गायत्री मन्त्र ही था।

मुलतान में उपदेश के समय स्वामी जी ने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और कहा कि यह मन्त्र सब से श्रेष्ठ है। तथा यह भी बतलाया कि चारों वेदों का यही मूल गुरुमन्त्र है। आदि काल में सभी ऋषि मुनि इसी का जप किया करते थे।

एक बार गायत्री सम्बन्धी किसी पूछे गये प्रश्न का उत्तर फर्रुखाबाद के पण्डितों को

श्री स्वामीजी ने इस प्रकार दिया था।

"गायत्री का जाप वेदोक्त रीति से करना चाहिये तभी अच्छाफल मिलता है। कारण— इसमें गायत्री के अर्थानुसार आचरण करना लिखा है।

रियासत जयपुर के इलाके के हीरालाल रायाल जो मांस, मदिरा का सेवन करते थे। इन्हें इस कुटेव से हटाकर गायत्री याद कराई। इन्हें रुद्राक्ष की माला और भस्म धारण कराई सन्ध्या तथा गायत्री की विधि भी पूरी बतलाई।

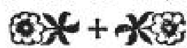
स्वामीजी की आज्ञानुसार अनूपशहर, दानपुर, कर्णवास, अहमदगढ़, रामघाट, जहांगीराबाद से अनुमानतः चालीस के लगभग विद्वान् ब्राह्मण गायत्री का जाप करने के लिए बुलाये गये और जप अर्ध शुक्लपक्ष में पूरा होगया।

श्रीस्वामीजी ने घोड़लसिंह आदि के यज्ञोपवीत कराये इस समय भी हवन तथा गायत्री का जप भी कराया हवन केवल सब ही दिन हुआ किन्तु जप १० दिन तक लगातार होता रहा।

एक अन्य स्थान पर सम्वत् १९२८ विक्रमी में ठाकुरों के दिये हुए तीन-चारसौ रुपये के दान में सम्पूर्ण रुपया हवन और गायत्री जप में लगा दिया गया। हवन तो तीन दिन ही हुआ किन्तु गायत्री का जप १५ दिन तक चलता रहा। यह कार्य १०-११ ब्राह्मणों ने सम्पन्न किया था।

हमारा व्यक्तिगत अनुभव।

(श्रीराम शर्मा आचार्य सम्पादक 'अखंडज्योति')



ईश्वर की कृपा से, उसके आशीर्वाद से हमारा जीवन प्रारंभ से लेकर अब तक साधना मय रहा है। स्वाध्याय, चिन्तन, आत्मनिर्माण, उत्तर दायित्वों की पूर्ति और लोक सेवा के साथ हमें आध्यात्मिक साधनाऐं करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अनेक सुयोग्य और कई अयोग्य गुरुओं के संरक्षण में हमने अनेकों, दीर्घ कालीन कष्ट साध्य साधनाऐं की हैं, अनेकों तपश्चर्याओं में अपने को काफी तपाया है। इस लम्बे साधन काल में हमने जो अनुभव प्राप्त किये हैं, उनके आधार पर यह कहा जासकता है कि अन्य सब साधना विधियों की अपेक्षा गायत्री की साधना अपेक्षा कृत सरल है, शीघ्र सफल होने वाली और अधिक उत्तम परिणाम उत्पन्न करने वाली हैं। इस साधना में वैसा कोई विक्षेप नहीं आता जैसा कि अन्य साधनाओं में आता है।

ईश्वर प्राप्ति और आत्म दर्शन की दक्षिण मार्गी साधनाऐं निर्बाध हैं। कथा, कीर्तन, भजन, व्रत, उपवास से आत्म शुद्धि होती है। इन्हें निरंतर करते रहने से मन के कषाय कल्मष दूर होते जाते हैं। यह पिपीलका मार्ग कहलाता है। चींटी धीरे धीरे चलती हुई भी कालान्तर में सुदूर देशों की यात्रा कर लेती है।

दूसरा विहंगम मार्ग है। यह जल्दी का रास्ता है। इसे हट योग या वाममार्ग भी कहते हैं। इस मार्ग पर चलने वाला उग्र परिश्रम करता है, कष्ट साध्य तपश्चर्याऐं करता है और उस साहसिकता के आधार पर देर के रास्ते को जल्दी ही पार कर लेता है। इस मार्ग में ऐसी छोटी पगडंडियां भी हैं जो किसी छोटे सकाम प्रयोजन को पूरा करने में विशेष रूप से फलवती होती हैं। ऐसी पगडंडियों को तंत्र मार्ग कहते हैं। हमने इन तीनों मार्गों का अभिगमन काफी दूर तक किया है। और उसके भले बुरे परिणामों को देखा है।

इस साधना काल में हमें व्यक्तिगत रूप से कितने ही अनुभव हुए हैं। राजमार्ग में-पिपीलका मार्ग में कथा, कीर्तन, संध्या, पूजा, प्रमुख हैं। इस मार्ग पर साधक को एक निष्ठा के साथ लम्बे समय तक चलते रहने की तैयारी करनी पड़ती है। यदि उसका मन फल की ओर झुका, या साधना के परिणामों को स्थूल दृष्टि से नापना शुरू किया, या नवीनता के अभाव में मन ऊबने

लगा तो उत्साह ठंडा पड़ जाता है। देखा गया है कि पिपी का मार्ग पर चलने वाले साधक कुछ समय पश्चात् हतोत्साह होजाते हैं और अपना प्रयत्न छोड़ बैठते हैं। हठ योग का मार्ग कष्ट साध्य है। उसमें इतनी गर्मी में अपने को तपाना होता है कि यदि साधक में पर्याप्त साहस, धैर्य और शौर्य न हो तो उसके पैर लड़खड़ा जाते हैं और थोड़ा बहुत आगे चल कर वह बैठ जाता है। तंत्र शीघ्र फलदाता है। पर उसमें खतरे काफी हैं। साधना काल में तलवार की धार पर होकर गुजरना होता है। थोड़ी भी भूल होजाने पर अनर्थ होसकता है। उस साधना के समय में विशेष रूप से ऐसे भय और प्रलोभन उपस्थित होते हैं जिससे फिसलजाने से सारा प्रयत्न निष्फल होजाता है और साधना भ्रष्ट होने के कारण कोई विपत्ति सिर पर आजाती है।

राजमार्ग से प्रभु प्राप्ति और आत्म दर्शन का पारमार्थिक लाभ होता है। हठ मार्ग से अपने में कोई चमत्कारिक शक्तियां एवं सिद्धियां उत्पन्न होती हैं। तंत्र से कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध होता है और किसी अदृश्य प्राणी से ऐसा संबंध होजाता है कि वह साधक का आज्ञानुवर्ती बनकर उसके बहुत से ऐसे कार्य पूरे करता है जो साधारण रीति से होने कठिन हैं। इन तीनों मार्गों को क्रमशः सत, रज, तम का मार्ग कह सकते हैं। चूंकि लोगों में से अधिकों की वृत्ति तम की ओर होती है इसलिए उन्हें तंत्र का मार्ग रुचता है। उससे कम रज में प्रवृत्त होते हैं वे साधना द्वारा राजसिक फल चाहते हैं। बहुत कम संख्या के लोग सत् प्रधान हैं, इसलिए ईश्वर प्राप्ति के लिए विरले ही साधना को पकड़ते हैं। तीनों मार्ग की साधनाएं साधारणतः अलग अलग हैं। कई बार तो इनमें भारी अन्तर होता है। राजमार्गी को अहिंसा का पालन करना होता है दूसरी ओर तंत्र मार्गी शाक, पशु बलि करने से भी नहीं हिचकते।

साधना क्षेत्र के इन तीन उपवनों में परिभ्रमण करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि गायत्री साधना में उपरोक्त तीनों मार्गों का समन्वय है। उससे तीनों प्रयोजन सिद्ध होते हैं और जो विघ्न अन्य साधनाओं में होते हैं वे इसमें नहीं होते। और सफलताएं अपेक्षाकृत अधिक शीघ्रता पूर्वक मिलती हैं। हम ऐसे महात्माओं और महापुरुषों को जानते हैं जिन्होंने केवल गायत्री का आश्रय लेकर आत्म साक्षात्कार किया है और ईश्वर के समीप पहुंचे हैं। समाधि सुख, परमानंद, जीवन मुक्ति और तुरीयावस्था का सर्वोच्च सुख उन्होंने गायत्री की कृपा से प्राप्त किया है। हमने अपनी आंखों ऐसे सिद्ध पुरुष देखे हैं, उनके साथ सहवास किया है जिन्होंने असाधारण आत्मिक बल संग्रह किया है और चमत्कारी सिद्धियां दिखाने की क्षमता प्राप्त की है। उनको यह सिद्धियां गायत्री द्वारा ही मिली हैं। हम ऐसे तांत्रिकों को भी जानते हैं जिनका उपास्य इष्ट गायत्री है और उसी के द्वारा वे अन्य तांत्रिकों की भांति पिशाच विद्या के सम्पूर्ण कार्य, तथा काम्य प्रयोजनों में सफल होते हैं। इस प्रकार हमने देखा है कि अकेली गायत्री में वह शक्ति मौजूद है जिससे विविधि स्वभावों के मनुष्य अपने उद्देश्यों को लेकर अध्यात्म मार्ग में प्रवेश कर सकें।

अपने इस निष्कर्ष के आधार पर हमने अपनी साधना का केन्द्र गायत्री को नियुक्त किया है। सवा करोड़ जप का पुरश्चरण कर चुकने पर हमें दृढ़ विश्वास होगया है कि इससे कम परिश्रम और कम खतरे में इससे अधिक सत्परिणाम उपस्थित करने वाला साधन शायद ही कोई होगा। जो सत्परिणाम हमारे स्वयं के अनुभव में आये हैं उन सबका वर्णन यहां संभव नहीं, पर इतना कहा जासकता है कि आत्मिक पवित्रता, ईश्वर की ओर प्रगति, तथा कष्ट ग्रस्त व्यक्तियों की सेवा में गायत्री शक्ति ने हमें महत्वपूर्ण सहायताएं दी हैं और संकट पूर्ण क्षणों में हमारा प्रत्यक्ष पथ प्रदर्शन किया है।

अपने व्यक्तिगत अनुभव तथा आर्ष ग्रन्थों और आप्त पुरुषों का आदेश दोनों ही प्रकार से गायत्री के महत्व पर हमें अटूट श्रद्धा हुई है। इसी के आधार पर अपने पाठकों से इस पथ का अनुसरण करने का साहस हमने किया है। हमारा विश्वास है कि जो गायत्री का आश्रय लेगा वह खाली हाथ न लौटेगा।

अनेक आपत्तियों से छुटकारा।

(श्री आर० वी० वेद, घाट कोपर)

एक साल पहले मेरे ऊपर कई कानूनी मुकद्मे चल रहे थे, सब तरफ से परेशानी थी, आर्थिक नुकसान होरहा था और बहुत समय से बीमारी चली आरही थी। वे सभी मित्र जिनसे सहायता की उम्मीदें थीं, इस कठिन समय में मुँह मोड़ चुके थे उस समय श्री जगदम्बा गायत्री ने ही सब तरह से और सब ओर से मेरी रक्षा की। मुझे सन् १९३७ से वेद माता गायत्री पर अत्यन्त श्रद्धा होगई है।

उस समय मैं प्रायः ध्यान मग्न रहा करता था, एक दिन, रात को स्वप्न में मुझे जब कि मैं काफी परेशान था एक दिव्य ध्वनि सुनाई पड़ी कि तुम अपनी सारी परेशानियों को भूलकर श्री जगदंबा के पास रक्षा के लिए जाओ। मुझे इस ध्वन्यात्मक चमत्कार से आश्चर्य हुआ, दूसरे दिन मैंने पुरश्चरण सम्बन्धी साहित्य जुटाना आरंभ किया। और सवालाख मंत्र जप के पुरश्चरण का आरम्भ कर दिया। और उसे अन्य ब्राह्मणों की सहायता से हवन तर्पण आदि के साथ ११ दिन में पूरा कर लिया, मैं सुबह जल्दी उठता और प्रति दिन जप और अग्नि होत्र करता। उससे मुझे चमत्कारी लाभ हुआ। सारी बीमारियां, सारी परेशानियां हवा की तरह छू मन्तर होगई मेरे पुराने दुश्मन भी दास होगये।

मां हमेशा अपने बच्चे की हिफाजत करती रहती है और वह वही सब करती रहती है जिससे बच्चा खुश रहे। मुझे अपने जीवन में इसके कई अनुभव हुए हैं—

मैं प्रति मंगल और और रविवार को महा-लक्ष्मी दर्शन के लिए नियमित रूप से जाया करता था। जब मैंने पुरश्चरण करना आरम्भ किया तब मैं सोचने लगा कि यह सब कैसे होगा। क्योंकि मैं दर्शन करने के पश्चात् ही भोजन किया करता था। यह सवाल अपने आप ही हल होगया। मेरे मित्र ने जो कि मेरे घर के पास ही रहते हैं, और किसी सरकारी विभाग में आफी-सर हैं, आवश्यकता के समय अपनी मोटरकार को उपयोग करने के लिए मुझसे एक दिन मेरे घर आकर कहा। वे सोचते थे कि इनकी पत्नी बीमार है, और कभी भी अचानक इन्हें कार की जरूरत पड़ सकती है। (क्योंकि घाट कोपर पर सिर्फ १ टैक्सी है और यहां से बम्बई १५ मील दूर है।) मैंने उनसे कहा कि इन दिनों मेरे सामने सिर्फ महालक्ष्मी के दर्शनों की समस्या है क्यों कि मैं ११ दिन के लिए वेदमाता गायत्री का पुरश्चरण कर रहा हूं और मैं अपने प्रत्येक काम के लिए इन्हीं पर निर्भर हूं। उन्होंने कहा कि तुम अवश्य पुरश्चरण आरंभ कर दो। सायंकाल ६ बजे जब कि जप आरती आदि से निवृत्त होंगे, यह कार तुम्हें दर्शन कराकर तुम्हारे भोजन के समय तक वापस लादेगी। इन दिनों मैं एक ही बार भोजन करता था। ये दिन बम्बई में साम्प्रदायिक दंगे के थे, और वह इलाका उन दिनों दंगा ग्रस्त घोषित था। और इसीलिए ३०-४० घण्टे का एक बार करफ्यू लगा हुआ था। इस कलियुग में भी यह चमत्कार हुआ। हमारी यात्रा में किसी प्रकार की न कोई मुसीबत आई और न विघ्न ही आया। एक बार तो जब हम कुछ कदम ही आगे बढ़े होंगे, कुछ गुण्डों ने वहाँ कोई बड़ा विस्फोट कर दिया, परन्तु हम सुरक्षित निकल गये।

इन्हीं दिनों में से एक दिन रात्रि को १०-३० पर मेरी पत्नी को वमन होने आरंभ हुए। आध या पौन घण्टे बाद ही मेरे उठकर जप आदि करने का समय आता था। मैंने अपने गृह—चिकित्सक को बुलाया जोकि मेरे अत्यधिक अन्तरंग मित्र हैं। मैंने उनसे कहा, मैं अब क्या करूं। मैं पत्नी की तीमारदारी करूँ या जप? मेरे लिए एक कठिन समस्या खड़ी होगई। पत्नी को मैं अत्यधिक प्यार करता हूं और जप यदि एक दिन के लिए भी छूटता है तो सारा सिद्धिकार्य खतम। डाक्टर ने मुझे ढांढस बंधाया और कहा कि अपनी साधना जारी रखो, मां भगवती इन की रक्षा करेंगी। मैं स्नानादि से निवृत्त होकर जप करने बैठ गया, इसी समय मेरी आंखों के सामने पूर्ण वेग के साथ मेरी पत्नी को फिर वमन हुआ। मैंने प्रार्थना की-मां अब मेरी लाज तेरे हाथ में हैं—और मैं पूजन में लग गया—सचमुच ही आश्चर्य की बात है कि सवेरे ६-३० बजे जब कि मैं पूजा से उठा मुझे बताया गया कि मेरी पत्नी को चमत्कारिक लाभ हुआ है और वे इस समय स्वस्थ व प्रसन्न हैं।

इसी तरह मेरी साधना के समय मेरे मुकद्दमे की एक तारीख थी, जिसमें मैं नहीं जासकता था और जो एक महत्त्व पूर्ण मुकद्दमा था, वह भी मेरे अनुकूल हुआ, क्योंकि उस दिन दूसरे फरीक का वकील ही गैर हाजिर होगया।

एक नहीं ऐसे अनेक चमत्कार मुझे देखने को मिले हैं।

मैं आज पूर्ण रूप से सुखी हूं। मुझे कोई अभाव नहीं है इस सबका श्रेय भगवती वेदमाता जगदम्बा गायत्री की कृपा को है जो कि गायत्री जप से प्राप्त हुई है।

\+ + +

आत्मा की उन्नति सुख और शान्ति के लिए गायत्री सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। जो उसे अपनाते हैं वे परमपद पाते हैं।

—कात्यायन

आत्म कल्याण की ओर

(श्री जटाशंकर नान्दी, पट्टन)

मेरी ७५वर्ष की आयु है। पिचहत्तर वर्ष की आयु में मैंने गत पचास वर्ष में अनेक लक्ष गायत्री जप किये हैं, इसका मूर्ति मंत फल यह आया है कि बिना प्रयत्न, सहज रीति से आपों आप गायत्री जप शुरू होजाते हैं। व्यावहारिक कार्य से निवृत्त हुआ कि जप की शुरूआत हो जाती है। ये फायदा ऐसा वैसा गौरवहीन नहीं। मनुष्य जीवन के अंतकाल की स्थिति भावी जन्म पर बहुत असर करती है। दूसरा लाभ यह है कि जिन सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति के लिये अगणित मनुष्य आयुष्य और आरोग्य की आहुति दे रहे हैं उन क्षण भंगुर पदार्थों पर मुझे उपेक्षा एवं विरक्ति उत्पन्न हुई है। जिस संसार को असार कहा जाता है वह मुझे सारगर्भित मालूम होता है इसलिए यम नियम का पालन सुगम हुआ है। ब्रह्मचर्य पालन,वाणी संयम और अहिंसा स्वभाव सिद्ध हुए हैं,कोई आफत के भावी प्रसंग आते हैं इससे दूर रहने के लिये स्वप्न में सूचना मिलती है जैसे लाल बत्ती दिखलाने से रेलगाड़ी ठहर जाती है। इसलिये संकटों में सदा दूर रहता हूं। अपेक्षित, शांत, संतोषी और सुखी जीवन बहुत स्पृहणीय है।

जिस पंचेन्द्रिय जनित क्षणभंगुर आनन्दों की प्राप्ति के लिये असंख्य सामान्यजन अपने तन मन और धन की आहुति देकर व्याधि और अकाल मृत्यु को प्रतिक्षण आमंत्रण दे रहे हैं उन तुच्छ स्वार्थों पर देह दुश्मनों जैसी तिरस्कार वृत्ति उत्पन्न हुई है इसलिए आयुष्य घातक कुटेवों और दुर्व्यसनों से सदैव रक्षण मिला है।

\+ + +

आत्मा और ईश्वर को मिलाने वाली, सब पापोंको हरने वाली और निर्मल प्रकाश देने वाली गायत्री को प्रणाम है। —पिप्पलाद

गायत्री मंत्र व मेरा अनुभव।

(चौधरी अमरसिंह, इन्दोरा, कांगड़ा)

मेरा अनुभव बहुधा पाठकों को अनोखा प्रतीत होगा, परन्तु सत्य लिखना व सत्य का प्रचार करना अच्छी बात है इस कारण बिना किञ्चितमात्र बढ़ाये घटाये सच्ची घटनायें लिखी जाती हैं। मेरी आयु इस वक्त ५० वर्ष से ऊपर है, बचपन से ही मुझे आध्यात्मिक विद्याओं का बड़ा शौक था १० वर्ष की आयु में मैं मेस्मरेजम के बहुत से कार्य कर सकता था। पीछे तो मैं साधना द्वारा अपनी शक्ति को और भी बढ़ाता रहा। मैंने ईश्वरी शक्ति की प्रणव, दुर्गाबीजमंत्र, गायत्री मंत्र द्वारा उपासना की इसके द्वारा इस प्रकार लाभ हुआ कि एक बार मैं एक ऐसे स्थान पर था कि जहां वैद्य इत्यादि कोई न था। वह स्थान ज्वर का भंडार था कोई व्यक्ति इससे न बचता था, मुझे भी भयंकर ज्वर हुआ। परन्तु ईश्वरीय शक्ति की कृपा से शीघ्र इससे छुटकारा मिला व स्वप्न में यह बताया गया कि अमुक दिवस तुम ज्वर मुक्त हो जाओगे। चाकरी में एक बार एक दुष्ट अफसर ने बहुत तंग किया तो निज गुरुजी को वह सर्व ब्योरा बताने पर उनके आग्रह से ईश्वरीय शक्ति से संकट निवारण की प्रार्थना की गई। प्रति दिवस १० मिनट एक मास तक प्रार्थना करनेपर बिना किसी असुविधा के उस संकट से छुटकारा मिला. ईश्वरी शक्ति से बिना प्रार्थना किये भी कई बार घोर संकटों से बचने के उपायों के संकेत प्राप्त हुये। जिन पर चलने से संकटों से मैं बच गया। सबसे बड़ा व अमूल्य लाभ जो मुझे ईश्वरी शक्तिकी उपासना से निष्काम भक्ति करते प्राप्त हुआ वह यह है आत्म शान्ति। मेरा मन बहुत शान्त रहता है।

गायत्री का जादू

(श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरल बी० ए०, दिल्ली)

मुझे बचपन से ही गायत्री मन्त्र सिखाया गया था--सो स्नान के बाद इसका १०८ बार उच्चारण करने का स्वभाव हो गया था। पिताजी से 'सत्यवादी' होना तो सीखा हुआ था और फिर बापू की आत्म कथा से सर्व प्रेम करना निर्देषी होना सीखा-क्युरो और नैन्हम को पामिस्टरी पढ़ कर हस्तरेखा का ज्ञान कुछ हासिल किया तो पता लगा कि मनुष्य अपने आप को बहुत कुछ हाथ देखकर अपनी भूलों का सुधार कर सकता है फिर हस्तरेखा को बदल सकता है। पता चला कि कुछ आत्म विश्वास कम है, सो दृढ़ निश्चय किया कि यह भी हासिल करना है। गायत्री मन्त्र गायत्री 'देवी' को सूर्य्य में ध्यान करके पढ़ती या एक शब्द का अर्थ मनमें समझ कर करती और प्रार्थना सदा ही रहती कि। "विद्या, बुद्धि, भक्ति दो। जिससे देश की सेवा, लोगों की भलाई, स्वार्थ रहित होकर करूँ" मन्त्रोच्चारण भी करती पर प्रार्थना मुँह से यही निकलती।

ऐसा एक साल किया होगा कि वाकई हस्तरेखायें बहुत बहुत बदल गईं। मेरा स्वभाव प्रकृति रहन सहन सब बदल गया। हां मैं प्राणायाम भी करती थी प्राणायाम एक दूसरा जादू है--पर गायत्री ने अपना रङ्ग अकेले ही काफी दिखाया। वह यों—

मेरी माता जी बड़ी सख्त बीमार पड़ीं। माताजी की टांगें, पांव बहुत सूजे हुए थे--बहुत दर्द होता उनके दर्द के कारण चिल्लाने की आवाज दूर दूर तक जाती हम सब बहिनों ने तीन २ घंटे की ड्यूटी लगाई हुई थी--मैंने रात कील रक्खी थी पर चित्त न मानता चौबीस घण्टे ही उनके पास व्यतीत करती। जब उन्हें दर्द होता वह मुझे ही बुलातीं मैं उनके पांव को

हाथों से पकड़ कर आंखें बन्द कर 'गायत्री' का जप शुरू कर देती । उनका दर्द जादू की तरह शान्त हो जाता। सो फिर तो जब मैं कभी सोई हुई भी होती तो माताजी यही कहतीं कि कान्ता को बुलाओ मैं फिर वैसे ही करती और वह शान्त हो जातीं—

उसके बाद मेरा छोटे पांच वर्ष के भाई की पीठ और टांग में जहरीला फोड़ा निकलने से दर्द होता। ओपरेशन हुआ घाव में जब २ दर्द अधिक उठता कहता मन्त्र पढ़ो—और मेरे मन्त्र पढ़ने के बाद ही शान्त होकर सो जाता—सो मुझे भी उसके शान्त होने पर अपार आनन्द मिलता। फिर तो जिस किसी के भी दर्द होता, कहीं भी कहतीं मेरे मन्त्र पढ़ दो—पिता जी हैरान हुए—पूछने लगे—कौनसा मन्त्र पढ़ती हो। पहले तो मैंने नहीं बताया—क्योंकि सुन रक्खा था कि बताने से मन्त्र की शक्ति कम हो जाती है। पर फिर पिताजी से तो मैं सदा ही जैसा कि उन्होंने सिखाया था मित्र का सा सम्बन्ध रखती । सो मैंने बताया। सो यदि हम ध्यान से प्रेम से इस मन्त्र को पढ़ें तो वाकई जादू ही है।

उन दिनों तब तो मेरी इतनी आदत होगई थी कि सोते भी यह मन्त्र मुँह में रहता—काम करते २ भी गायत्री मन्त्र मुँह में रहता—मुझे पता भी न होता और गायत्री मन्त्र का उच्चारण होता रहता सो 'गायत्री' के 'जादू' का ही असर दिखाया।

दुर्भाग्य टला

(श्री पं० रामकरण शर्मा, बम्बई)

एक समय था जब मैं अच्छी तरह अपनी आजीविका चला रहा था परन्तु कुछ समय बाद ऐसे तूफान आने शुरू हुए कि काम काज भी कुछ नहीं रहा और कर्जा भी बेहद हो गया, बेकारी का सवाल सामने था, स्वतंत्र व्यापार के लिए पैसा नहीं—नौकरी कहीं रुचि के अनुसार प्राप्त नहीं हुई, तथा अनेक तरह तरह के विघ्न सामने आते रहे। विघ्न बाधाओं तथा आर्थिक परेशानियों से परेशान होकर मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। यहां तक कि मेरा दिमाग भी जवाब देने लगा। मैं अपने घर से बार २ निकट के शहर में जाता—कई बड़ी कम्पनियों के प्रधानों ने वादा करके भी फिर वादा पूरा करने में असमर्थता प्रगट की।

एक दफा एक कम्पनी के मैनेजर ने कहा कि २० दिन बाद आना तुमको काम मिल जायगा, जब मैं २० दिन बाद गया तो असमर्थता प्रगट कर दी। मुझे बड़ी आत्म ग्लानि हुई. यहां तक कि मैं जीवन से हाथ धो बैठने को भी तैयार हो गया था, किसी तरह मन को एकाग्र करके भगवान से प्रार्थना की, तो यकायक प्रेरणा हुई कि घर जाकर सवा लक्ष जप भगवती गायत्री माता के करो और शीघ्र ही इसको कार्य-रूप में परिणित करने के लिए तीव्र इच्छा जागृत हो उठी, शायद पापों का शीघ्र अन्त करने के लिये भगवान की यह महती कृपा हुई हो, ईश्वर की कृपा से विधि पूर्वक मैंने सवा लक्ष जप करना आरम्भ किया ईश्वर की परीक्षा बड़ी विकट होती है, जिन दिनों मेरा अनुष्ठान चल रहा था। संयोगवश मेरे माता और पिता दोनों बीमार हुये, मां तो इतनी सख्त बीमार हुई कि एक दिन तो हम आखिरी आशा भी छोड़ चुके थे, यह मेरे अनुष्ठान का ११वां दिन था, (अनुष्ठान १५ दिन का था) लोग अनेक तरह व्यंग-पूर्ण बातें करते हुये नजर आने लगे, बल्कि एक ने तो मेरे से कह भी दिया कि 'अच्छा अनुष्ठान किया' जहर का सा घूंट पीकर मैंने बर्दाश्त किया, फिर इसी दिन मां सख्त बीमार हुई, मैं अब किसके पास जाता, सब आशा छोड़कर मैं अनुष्ठान की जगह गया और प्रभु से सच्चे हृदय से प्रार्थना की कि हे पिता! अगर इस समय मेरी मां को कुछ हो गया, तो मेरा तो जो कुछ होगा सो होगा

ही परन्तु आप भी बदनाम हो जावेंगे। आखिर ऐसा नहीं हो सकता कि प्रभु सच्ची प्रार्थना को न सुनें, दूसरे ही दिन से स्वास्थ्य में लाभ प्रतीत होने लगा। पिताजी का स्वास्थ्य भी ठीक हो गया, भगवती गायत्री माता का सवा लक्ष जप पूर्ण हुआ, बिगड़ी हुई बातें ठीक होती नजर आने लगी तथा कुछ ही दिनों बाद मुझे अच्छी आमदनी का काम भी मिल गया है तथा सभी बातें ठीक होती नजर आ रही हैं, विश्वास हो रहा है कि निकट भविष्य में और भी सुन्दर भविष्य का निर्माण होने जा रहा है, गायत्री माता के उपासक को आने वाले सुख और दुखों का आभास आत्म संकेत द्वारा मिलता रहता है, किसी आने वाली मुसीबत की सूचना मिलते ही गायत्रीमाता की शरण में होजाने से पहाड़ के बराबर विपत्ति राई के बराबर होकर निकल जाती है, वल्कि अधिकतर तो वह सामने आती ही नहीं है यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है।

स्वर्गीय स्त्री द्वारा गायत्री के लिए उपदेश

(डा० रामनरायन भटनागर, इटौआ धुरा)

गायत्री माता का प्रवेश मेरी शुभि बुधि में मेरे हृदयङ्गम में सन् १९२८ ई० से विराजमान है, किसी विशेष रूप विधि विधान से माता को अपनी अज्ञता और पथ प्रदर्शक न होने के कारण प्रयत्न न कर सका फिर भी मेरी भावना, मरा २ जपने वाले वालमीकमुनि जैसी रही और नित्य प्रति हवन करना और गायत्री मन्त्र का ९ माला से अर्थ सहित जाप करना। यह क्रम १९३० ई० तक रहा, साथ ही प्राणायाम का मन्त्र सहित अभ्यास चलता रहा, सन् १९३१ ई० में कांग्रेस की गिरफ्तारियां जोरों से होने लगीं जेलके भय से सी०आई० से बुन्देलखन्ड चला गया, स्कूल छूट गया और वहीं उदरपूर्ति के लिये काल बिताना उचित समझा दोनों काल ही गायत्री की केवल ९ माला सुबह और शाम प्राणायाम का अभ्यास चालू रहा? हवन रविवार, अमावस्या, पूर्णिमा और विशेष अवसर पर ही निर्धारित रहा? सन् १९३४ तक यह नियम बड़ी सुगमता और प्रेम से चलता रहा! सन् १९३५ में यह नियम खंडित होगया वरन् १९३६, ३७-३८, ३९ तक यह क्रम टूट गया प्रियजनों की मृत्यु पर चित्त स्थिर न रह सका थोड़े २ दिनों बाद क्रिया का विच्छेद करने लगे हृदय को भारी ठेस पहुंची। पागलपन छा गया। शरम की वजह से लोगों से अपना कष्ट भी नहीं कह पाता था कि यह लोग क्या कहेंगे? जनवरी १९४० ठीक दिन और समय याद नहीं, रात्रि में स्वप्न हुआ मेरी स्वर्गीय स्त्री जारजट की सुर्ख धोती पहिने, (वह धोती उसको जब वह गर्भवती थी तब सतमासे में मेरी माताने मँगाई थी) साधारण श्रृंगार किये मेरे मिलने को आखड़ी होगई और बोली सो रहे हो, मैंने कहा 'नहीं', नींद कहां, तुम यहां कैसे आई। उसने उत्तर दिया कि तुम्हारा यही हाल भला कब तक रहेगा? मैंने रोते हुए कहा तभी तक रहेगा जब तक तुम्हारी इच्छा हो, उसने मेरे दोनों हुड्डे पकड़ कर चूमते हुए उठाया और कहा कि दुनियां क्या कहेगी कि कितने नेमी धर्मी होते हुए औरत के पीछे पागल होगये। पूजा, पाठ, जप, तप सब भूल गये? एक धोती लाल रंग की किसी ब्राह्मणी को देकर अपना पूजा पाठ करो अच्छा?''' मैं कुछ कहने भी नहीं पाया कि झटक कर भाग गई मेरी घिग्गी बंध गई? मैं उस समय मौजा वस्तोई, तहसील सिकन्दरा-राऊ, जिला अलीगढ़ में था। बाहर और लोग भी सोरहे थे, उन्होंने फौरन मुझे जगाया मैं उठ कर बैठ गया मेरी आंखें आंसुवों से तर थीं? मैंने सब हाल उन लोगों को सुनाया वह लोग बड़ा ढारस देने लगे? कुछ दिन ही बाद पूर्णमा होने वाली थी मैंने एक धोती लाल रंग में रंग कर एक ब्राह्मणी को दे दी और उसी दिन से वही अभ्यास और साधना प्रारम्भ कर दी।

सन् १६४२ ई० से श्रीरामनाम लेखन, महायज्ञ का क्रम चल रहा है इस अनुष्ठान के साथ केवल गायत्री की एक माला १०८ जप किया केवल खूब बड़े ६ सांसों में पूर्ण करने का अभ्यास होगया है और इच्छा यह है कि इन्हीं ६ सांसों में कुछ शब्द अर्थ का भी अभ्यास होता चले? प्रयत्न कर रहा हूं, पर है कठिन। प्रयत्न तो करूंगा ही। अब अनुभव में क्या लिखूं, सब कुछ बातें जानकारी जो आपकी पुस्तक 'गायत्री की चमत्कारिक साधना' में हैं। वह बातें सब कुछ अपने में पाता हूं? पर गर्व नहीं? हां बाजे वक्त अद्भुत आश्चर्य में स्वयम् पड़ जाता हूं, ऐसे रोगी टी० बी० के जिनका ऐक्सरा होगया और सरकारी डाक्टरों ने भुवाली, मंसूरी की सम्मति दे दी, या बड़े २ चोटी के डाक्टरों ने असमर्थता प्रकट कर दी और वे लोग इस विचार से आगये कि इतना खर्चा भुवाली मंसूरी का बरदाश्त नहीं कर सकते लिहाजा मरना तो है ही थोड़े से पैसे खर्च करते हुए दवा खाते रहो?

जब ऐसे रोगी को मैं औषधि देता हूं तो औषधि को केवल ६ बार गायत्री मन्त्र से प्रभावित कर स्वयम् अपने हाथ से एक हाथ रोगी के शिर पर रख कर मैं दवा छोड़ता हूं और इसी तरह एक घूंट जल गायत्री मंत्र से प्रभावित कर पिला देता हूं? ऐसा अनुभव हुआ है कि ६ ही दिन उपरान्त काफी परिवर्तन जान पड़ा है, मुझे और देखने वालों को आश्चर्य ही आश्चर्य दीख पड़ा, इतना वायदा मैं ऐसे रोगियों से जरूर करा लेता हूं, कि लेटे लेटे माला राम नाम की फेरते रहो। सात आठ रोगी तो मेरे द्वारा इस प्रकार अच्छे हुए हैं इसके अतिरिक्त जो कुछ बेढव मसाला जब मेरे सामने होता है तो वही गायत्रीमाला मेरी कठिनाई को सरल करती रहती है? और कोई अनुभव नहीं, सब कुछ आपकी किताब में जो कुछ है शब्द शब्द सत्य है माता की साधना में ब्रह्मचर्य, शुचिता, सत्यता, इन बातों का विशेष ध्यान रखा जावे। ——

स्त्री और पुत्र की प्राण रक्षा।

(श्री लक्ष्मीनारायणजी श्रीवास्तव B.A.L.L.B. कनुकुवा, हमीरपुर)

——

गायत्री जप का अनुष्ठान का मेरा अनुभव है वह संकटों के दूर करने के लिए सर्वोत्तम है। मेरी स्त्री के जब बच्चा पैदा होता था तब हमेशा ही सख्त बीमार होजाती थीं और जीवन की आशा नहीं रहती थी इस बार मैंने पहिले से ही गायत्री माता से प्रार्थना करके संकल्प को लेकर जप किया फलस्वरूप इस बार कोई ऐसा घोर कष्ट नहीं हुआ और न हालत ही खराब हुई और कुछ दिनों पश्चात अच्छी होकर स्वस्थ निकलीं।

एक बार मेरा बड़ा लड़का जिसकी उम्र करीब ७ साल थी मोतीझरा की बीमारी में ग्रसित होगया। कई दिनों की बीमारी के पश्चात एक रात उसकी हालत बहुत खराब होगई। बिल्कुल बेहोशी की बात चीत करता था और जोरों से चिल्लाता था बच्चे की दशा देखकर इतनी असहाय अवस्था का अनुभव कर रहा था कि आत्म हत्या करलूँ ताकि यह दशा न देखूँ इसी विचार से रात के सुनसान समय में घर से निकल पड़ा और जंगल की ओर गया। सुनसान जंगल में जहां पर एक चिड़िया के बोलने की भी आवाज न आती थी घबराया हुआ टहलता रहा इतने में एक कुँवा दिखाई दिया तो विचार किया कि इसी कुँवा में कूद पड़ें अतः उसी ओर झपटा और कुंवा की जगत पर चढ़ गया इसी समय गायत्री माता के शीतल हस्त कमल का ध्यान आया और रो रोकर माता से बच्चे के स्वस्थ होने की प्रार्थना करता रहा। अपनी उस दीन व असहाय अवस्था माता के सन्मुख कहता रहा। मुझे नहीं ज्ञान हुआ कि इस दशा में कितनी देर रहा जब कुछ होश आया तो अपने को उसी कुंवा की जगत में पड़ा पाया। धीरे २ उठकर घर की

ओर चला, चित्त में शान्ति थी। घर पहुंचकर देखा बच्चा सुख की नींद सोरहा है। थोड़ी देर बाद बच्चा जगा और कहा भूख लगीहै। मैंने माता को कोटिशः धन्यवाद दिया और उस दिन से गायत्री माता में इतनी श्रद्धा हो गई कि आजन्म न भूल सकूंगा—

आपत्ति काल में गायत्री माता की सहायता की जितनी प्रशंसा की जाचै वह सब थोड़ी है।

जप करते समय गायत्री माता के ओजस्वी स्वरूप का ध्यान अवश्य करना चाहिये। ध्यान हट जाने पर चित्त दूसरी जगह से हटाकर उसी में ध्यान जमाना चाहिए प्रारम्भ में ध्यान हटकर अन्य सांसारिक वस्तुओं पर अवश्य चला जाना है परन्तु इससे निराश नहीं होना चाहिये बल्कि फिर से ध्यान को माता के स्वरूप में ही लगाना चाहिये। कुछ समयके बाद धीरेधीरे ध्यान जमने लगता है और अनुष्ठान के पूर्ति के समय तक ध्यान पूर्ण स्थिर हो जाता है। फिर उसमें जो आनन्द आता है उसका वर्णन करना व्यर्थ है। क्योंकि वह तो स्वयं अनुभव करने की वस्तु है परन्तु मैं इतना अवश्य जोर देकर कह सकता हूं कि गायत्री उपासना से सांसारिक जीवन में जो सहायता मिलती है वह अपार है। जो किसी उपाय से नहीं हो सकता वह गायत्री मंत्र की उपासना से अवश्य मिल जाता है यह अक्षरश सत्य है। जिसे विश्वास न हो वह करके स्वयं देखलेवे।

गायत्री पर अटूट विश्वास

(श्रीमती मेधावतीदेवीजी, नगीना)

गायत्री मन्त्र ईश्वर उपासना के लिये मुख्य मन्त्र है। मेरा तो इस पर अति अटूट विश्वास व श्रद्धा रही है मुझे बचपन से इस मन्त्र से अति प्रेम है मुझे बचपन की अपनी एक बात का स्मरण है अपने पास माला न होने के कारण मोटे से डोरे में १०० गाठें लगाकर मैं उसके गायत्री का जप करती थी एक दिन मेरे पिताजी ने मेरी माला देखली और गायत्री में मे मेरा प्रेम समझ कर मुझे सच्चे मूगों की माला दी थी। गायत्री जाप से मुझे ऐसा भासने लगता है मानो मैं अपने प्यारे पिता से बातें कर रही हूं अथवा अपना कण्ठस्थ पाठ सुना रही हूं। जब २ मुझे आपत्तियों का सामना करना पड़ा तब २ मैं गायत्री मंत्र द्वारा अपने प्रभुके समीप चली जाती हूं और मुझे विश्वास होने लगता है कि अवश्य पिता मेरे दुख सुनरहे हैं और अवश्य निवारण करेंगे। एक बार नहीं अनेक बार मैं अपने पुत्र के इधर उधर फिरने और कुछ कार्य न करने से अति दुखित थी तब भी मैंने प्यारे पिता को स्मरण करके गायत्री माता की शरण ली और विधि पूर्वक इसका अनुष्ठान किया। (जिसकी विधि अखण्ड ज्योति में लिखी है) उसका चमत्कार आश्चर्यजनक हुआ जिसदिन प्रातःकाल में यज्ञ करने वाली थी रात्रि भर यही विचार रहा कि यज्ञ में सम्मिलित होना उसका अति आवश्यक था और आत्मा से आवाज आरही थी कि प्रातः वह कहीं से आजावेगा प्रातः यज्ञ की तैयारी में मैं लगरही थी और उसके आने की ऐसी प्रतीक्षा लगरही जैसी सूचना आने पर लगी रहती है यज्ञ आरम्भ होने वाला था क्या देखती हूं कि मेरा पुत्र सतीशचन्द्र आंगन में मेरे सन्मुख खड़ा है। इस प्रकार के चमत्कारिक अनुभव मुझे अनेकों बार हुए हैं।

प्राचीनकाल में सन्तान न होने पर पुत्रेष्टी यज्ञ किया करते थे। महाराजा अश्वपति ने सन्तानोत्पत्ति के लिये गायत्री मन्त्रोंसे यज्ञ किया था जिसके फल से एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम भी अश्वपति ने गायत्री के सदृश्य सावित्री रक्खा था राजा जनक के जमाने में जब जनकपुरी में अकाल पड़ा और प्रजा भूखी मरने लगी तब जनकजी ने वर्षा होने के लिये गायत्री यज्ञ किया

जिसके फलस्वरूप वर्षा भी हुई और सीताजी की उत्पत्ति भी हुई। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। गायत्री मन्त्र का जप तथा यज्ञ करने से सांसारिक सफलता के साथ २ हमारा ईश्वर भक्ति में भी प्रेम बढ़ता है मनके एकाग्रचित होने में अति सहायता मिलती है और आत्मा को एक विशेष प्रकार की शान्ति प्राप्त होती है यह आत्मशान्ति ही मनुष्य जीवन की सच्ची सफलता है!

सर्वश्रेष्ठ और सर्व सुलभ साधना।

(श्री रमेशचन्द्रजी दुबे इटा)

मैं अपनी कुटी में गायत्री की साधना किया करता था, तब मुझे बड़े दिव्य अनुभव होते थे। एक रात्रि को मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि दक्षिण दिशा से कोई सितार पर गाता हुआ मेरी कुटी के निकट आया और कुछ देर ठहर कर उत्तर दिशा की ओर चला गया। उठकर देखना चाहा तो अपने को असमर्थ पाया। शरीर ऐसा जड़ होगया था जैसे लोहे की जंजीरों से जकड़ा हुआ हो। जब वह संगीत काफी दूर चला गया तब उठ सका पर उस समय प्रत्यक्ष दर्शन के लिए कुछ न था। उन दिनों मुझे और भी तरह २ के अनुभव होते थे जैसे—अपने चारों ओर सिद्ध महात्मा घिरे दिखाई देना, उनके आदेश मिलना, शरीर पर बड़े बड़े सर्प चढ़ते उतरते दिखाई देना, भयंकर हिंसक पशुओं का आक्रमण होना। सुन्दरी स्त्रियों का दूषित हावभाव करते हुए मेरे निकट फिरना। इस प्रकारके विघ्नों से विचलित न होकर मैंने अपनी साधना की मंजिल पूरी करली।

साधना पूरी होजाने पर अनेक प्रयोगों में मुझे आश्चर्यजनक सफलता दिखाई दी है। विषाक्त कीटाणुओं, रोग दर्द उन्माद आदि से पीड़ित व्यक्तियों को अच्छा कर देना, पथ भ्रष्टों में सुबुद्धि उत्पन्न होना, वस्तुओं का पारदर्शक दीखना आदि आदि। मेरे लिए गायत्री की साधना सर्वश्रेष्ठ और सर्व सुलभ सिद्ध हुई है।

पुरश्चरण से जीवनोत्थान

दो वर्ष पूर्व मैंने गायत्री पुरश्चरण किया था। गायत्री मंत्र जपने में मुझे बड़ा आनन्द आता था चित भी उसमें मेरा खूब ही लगाता। मैं इस कार्य को भार रूप नहीं समझता था। किन्तु समझता था मैं इसे स्वकर्तव्य। एक महीने में मैंने गिनती के एक लक्ष सताईस सहस्र जाप कर लिये थे।

गायत्री मन्त्र पूर्ण रटा करता था एक महीने के समय में मेरा चित बड़ा प्रसन्न रहा। और अनेक रंग एवं प्रकाश नजर आये। जिस प्रकार अग्नि में स्फुलिङ्ग उठते हैं वैसे नेत्रों के सन्मुख अनेक स्फुलिंग उठा करते थे और अब भी उठते हैं।

मैं यह नहीं लिखना चाहता कि गायत्री के साधन से मैंने क्या प्राप्त किया? किन्तु मैं यह जरूर कहूंगा कि गायत्री पुरश्चरण मेरे जीवन के उत्थान का कारण अवश्य हुआ है।

स्त्री की रोग-मुक्ति और पुत्र-प्राप्ति।

—+—

मेरी स्त्री संग्रहणी रोग से दो वर्ष से पीड़ित थी अनेक औषधियों का प्रयोग किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ दैवयोग से अखंडज्योति के किसी अंक में गायत्री के साधन का लेख छपा था उसी के अनुकूल मैंने सवा लक्ष गायत्री मंत्र का अनुष्ठान पन्द्रह दिन में पूरा करने का संकल्प किया और पन्द्रहवें दिन गायत्री मंत्र से हवन कराके ब्राह्मण भोजन कराया। अब डेढ़ वर्ष हो चुका है मेरी स्त्री पूर्ण स्वस्थ रहती है। ईश्वर की कृपा से रोग के बाद एक बालक पैदा हुआ

है। और मैं अगर गायत्री मंत्र से किसी को झाड़ दूं तो वह अच्छा हो जाता है।

गायत्री द्वारा प्राण रक्षा।

(श्रीशंकरलाल व्यास महेश विद्याभूषण.कसरावाद)

एक समय मेरा बच्चा बीमार हुआ यहां तक की डाक्टर वैद्योंने भी हाथ टेक दियेथे। उसवक्त उस की बड़ी शोचनीय दशा थी मैंने दस हजार गायत्री जप का संकल्प कर दिया। प्रभु की कृपासे धीरे२ उसे आराम होने लगा और भला चंगा होगया। इसी प्रकार एकबार मैं घोड़े की सवारी से किसी ग्राम को आरहा था। पहाड़ी प्रदेश होने के कारण विशेषकर पगडंडी की राहसे जाना पड़ता है रात्रि का समय था मैं रास्ता भूलकर एक बीहड़ जंगल में जा फँसा जहां भटकते २ कई घंटे व्यतीत होगये जंगलीपशुओं की यत्र तत्र आवाज सुनाई देने लगी उस समय मैंने मानसिक गायत्री जाप शुरू किया कुछ देर बाद मैं फिर आगे बढ़ा चलते चलते एक मोटर की आवाज जैसी आहट आती हुई सुनी उस दिशाको जाने से सड़क मिल गई और उस भयंकर जंगल से मेरे प्राण बच गये।

अश्रद्धालुओं, अयोगियों, और अविश्वासियों को भी स्वयं अनुभव करने पर यह विश्वास हो जाता है कि गायत्री मन्त्र की शक्ति साधारण नहीं है।

जेल से छुटकारा।

(श्री गुरुचरणजी आर्य बिढ़िया)

यों तो ८० वर्ष पहले ही से आर्य समाज में आने पर ऋषि दयानन्द सरस्वती के वैदिक संध्या द्वारा मुझे गायत्री मन्त्र का दर्शन और संध्या करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। और जिसका कि मैं आज तक सोने जागते स्नान करने के बाद संध्या में बारबार जपता चला आ रहा हूं।

अब तक तो मैं इसे यहीं तक सीमित रखता था। लेकिन जब मैंने 'अखण्डज्योति' में किन्हीं महानुभाव का गायत्री का चमत्कार लेख पढ़ा जो मनुष्य के भौतिक दुःखों पर भी प्रयोग करने पर तत्काल फलदायी होता है। तब लगा डूबक गोता पर गोता लगाने और जिन जिन चीजों की प्राप्ति हुई और होरही है उसको पाकर उसी में डूबा ही रह जाना चाहता हूं। इस गायत्री की प्राप्ति के लिये मेरे शरीर का रोमां रोमां जीवन भर ऋषि दयानन्द सरस्वती और आचार्य श्रीराम शर्मा का आभारी रहेगा।

महात्मा गान्धी का 'भारत छोड़ो, देश' अगस्त आन्दोलन की आंधी आकर जब चली गई तो अंग्रेजी सरकार की पुलिस मुस्तैदी से निर्दोष कांग्रेसमैनों को पकड़ पकड़ कर जेलों में ठूंस रही थी। उन्हीं पकड़े जाने वालों में एक मैं भी था मुझ पर रेलवे गोदाम का ताला तोड़कर माल चुराने का झूठा आरोप लगाकर एक वर्ष की सख्त सजा और एक सौ रुपया जुरमाने का फैसला दिया गया। जेल आकर मैं झुंझला रहा था पुलिस वालों पर सरकारी हाकिमों पर और साथ ही अपने पर कि सालभर निर्दोष जेल में बन्द रहूं? पर मैं जेल की चहार दिवारी से घिरा बाहर निकलने से रहा।

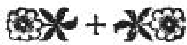
उन दिनों आरा जेल से बदल कर भागलपुर चला आया था। जेल वास में मेरे साथी तथा और लोग जहां कुछ खेल तमाशा करके अपना दिल बहलाने में लगे रहते थे वहां मैं अकेला एकान्त में बैठा जेल से बाहर जाने के लिये विशेष चिन्तित रहता था। मैं जिस वार्ड में रहता था उसके पास ही से जेल की ऊँची दीवारों को लांघकर लंगूरों का एक बड़ा दल भीतर आ जूठी रोटी भात खाकर फिर ऊँची दिवालों को सुगमता पूर्वक लांघकर बाहर चला जाता

उन लंगूरों और ऊँची दीवारों को बड़े गौर से देखता।

भागलपुर आये अभी कुछ दिन हुए थे। जेल मुझे असह्य प्रीतत हो रहा था। और तब मैं मुक्ति ही के लिये विशेष रूप से गायत्री को जपने में लग गया। सुबह, शाम स्नान के बाद, अपने वार्ड के पीछे एकान्त में कम्बल पर आसन लगा बैठ जाता और घन्टों गायत्री जपता, फिर अकेले उसीमें लीन रहता। यह सिलसिला अभी पूरा एक महीना भी नहीं चल पाया था कि जेल के चपरासीने एक दिन आकर सूचना दी कि आपको अमानत पर रिहाई के लिये आज ही तार द्वारा आदेश आया है। मैं स्वयं व आश्चर्य से चकित हो गया। मेरे सामने गायत्री का बद साहाह मूर्तिमान होउठा। मैंने भक्तिपूर्ण उसे प्रणाम किया जेल से विदा हो घर आने पर एक रोज जज साहब के इजलास में हाजिर हुआ। अन्तमें मैं जेल से पूर्ण तया छुटकारा पा गया।

निराशा में आशा।

(श्री प्रकाश नारायणजी मिश्रा, मुन्द्रावज)



मुझे १० वर्ष की अवस्था में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी गई थी और जभी से मैं इस महा मंत्र की साधना करता हूं मैंने इसका लाभ स्वयं आंखों देखा है। मेरे विद्यार्थी जीवन का अनुभव है कि मैं कक्षा १० में अध्ययन करता था कि दैवी कुचक्रसे छमाही परीक्षा के समय मेरे परिवार के आधार मेरे ताऊजी का स्वर्गवास होगया। पीरक्षा न देसका और इसके ३ माह बाद ही मेरे पिताजी का देहान्त होगया मेरे अध्ययन में महा संकट उपस्थित हुए जब मेरे पिताजी का देहान्त हुआ वार्षिक परिक्षा के केवल २५ दिन रह गये थे। परन्तु मैं इसी महा मंत्र के विश्वास पर डटा रहा पिताजी की क्रिया समाप्त कर परीक्षा देने गया सफल होने की कोई आशा न थी पर पीरक्षा के पश्चात ग्रीष्मावकाश में मैंने इस महामंत्र की साधना बढ़ा दी और इसी के प्रभाव से मैं परिक्षा में सफल होगया।

इसके पश्चात मैंने जितने भी कार्य इस मंत्र के विश्वास पर किये अभी तक सफल होते गये हैं।

मेरे एक पितामह थे उनको गायत्री का ही इष्ट था एक बार वे शत्रुओं के कुचक्र में पड़ गये थे और शत्रु उनको जेल भिजवाने का प्रयत्न कर रहे थे परन्तु सवा लक्ष महा मन्त्र के जप से वे इस कुचक्र से बच गये और उनका शत्रु नष्ट होगया यह मेरे आंखों देखा अनुभव है। वे प्रति दिन १० माला जपा करते थे उनका देहान्त अभी ३ अप्रेल ४८ को हुआ है, मृत्यु पर्यन्त भी उनके मुख की आभा ऐसी जान पड़ती थी मानो हँस रहे हैं। इस महा मंत्र के विषय में जितना लिखा जाये कम है।

दिव्य तेज का दर्शन।

(श्री वासुदेव पांडे कन्नौज)

—+—

मैं अपने उपनयन काल से अब तक अस्वस्था-वस्था के अतिरिक्त नियमित रूप से १ बार १०८ बार गायत्री जप करता आया हूं जिससे मुझे अत्यन्त बल शान्ति का अनुभव हुआ है, विगत सम्वत् १९९६ तक १४ मास पर्यन्त उपवास करके प्रतिदिन १००० मन्त्र जप करता था उस समय मुझे अपने में एक अपूर्व तेज दिखाई देता रहा। हमें ही क्या सब पासपड़ोस के भक्त बनकर श्रद्धापूर्वक सब प्रकार से सेवा करते रहे। ऐहलौकिक कार्य ऐसी सफलता से पूर्ण हुये हैं जिनका वर्णन करना एक विशाल ग्रंथ बनाना है। मैं कोई विशेषानुष्ठान न करके साधारण स्थिति में रहकर ही सन्ध्योपासन करके तीन ओंकार युक्त गायत्री मंत्र जप करता हूं। हां मुद्रायें आदि अन्त में अवश्य कर लेता रहा हूं।

प्रेतात्मा का शमन

(पं० धारादत्तजी शास्त्री, वेदान्ताचार्य, बाराणसी काशी)



मेरे पितामह दादा, मेरठ निवासी पं० श्री कन्हैयालालजी ब्रह्मचारी साधारण पंडित व्यक्ति थे। किन्तु गायत्री के पक्कोपासक थे, प्रातः ४ बजने से १० बजे तक गायत्री जप में ही संलग्न रहते थे। करीब २० वर्ष पूर्व की घटना है। हम लोग बीकानेर राज्यान्तरगत हनुमानगढ़ के पास एक गांव में रहते थे। रात का समय था, (करीब २।। या ३ बजे का) कुँए पर पानी लेने जारहे थे। मैं भी साथ में था। उसी समय एक प्रेतात्मा ने मुझ पर आक्रमण करना चाहा। वह पहले वृहत शूकर बनकर आया। पश्चात् महिष (भैंसा) बना। यह देखकर ब्रह्मचारी जी ने मुझे अपने सामने कर लिया। तब वह मनुष्य रूप धारण कर हमारे साथ चलने लगा। ब्रह्मचारीजी निर्भय एवं शान्त हो अपने मार्ग पर चल रहे थे। वह अनेक प्रकार के रूप दूर ही दूर से प्रकट करता रहा। मैं भी यह विचित्र तमाशा देखकर दंग था।

कुँए पर आकर ब्रह्मचारीजी ने जल से मण्डल बनाकर मुझे बैठा दिया। और स्वयं नित्यनियमों में लग गये।

मैंने सुस्पष्ट देखा कि वह प्रेतात्मा कभी मुख से कभी शिर से भयंकर अग्निज्वाला फेंकता है। कभी मनुष्य, कभी हिंसक जन्तु बनकर भयोत्पादन करताहै। यह भ्रम नहीं था, सत्यघटना थी। और करीब १—१।। घन्टे तक, वह अपना अनेक प्रकार का प्रदर्शन करता रहा।

क्षणिक घटना में भ्रम हो सकता है। इतने समय तक होने वाली घटना को कैसे भ्रम मान सकते हैं। वह भी तब जब हम पूर्ण होश में बुद्धि पूर्वक अध्ययनकरें। जब मैंने बाबा से पूछा कि वह कौन था, तब उन्होंने कह दिया वह प्रेतात्मा था हम लोगों से छेड़ना चाहता था। हमने पूछा कि आप से कुछ न कह सका, तब उन्होंने कहा कि बेटा यह गायत्री मंत्र का प्रभाव है। ऐसे २ अनेक भी आवें तो हमारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे। तब हमने कहा कि वह मन्त्र हमें भी दे दो, तो उन्होंने कहा कि जब तुम्हारा अनेक करायेंगे तब वह मन्त्र तुम्हें देंगे।

जप मात्र से रोग मुक्ति।

(डा० रामकृष्ण आर्य, लखनऊ)



गायत्री की साधना को निरन्तर कई महीने तक किया अरसा १४ मास का हुआ। अब अपना रोज का कर्म है प्रातः सायं दोनों समय गायत्री का जाप। कोई नियत संख्या नहीं है, दिन में किसी समय भी मनमें चिन्तन रहता है या गुन गुनाया करता हूं।

अब कोई भी दुख महसूस नहीं होता गायत्री ध्यान में रहने से दुख भूला रहता है। किसी भी आकस्मात घटना के घट ने से घबराहट पैदा नहीं होती। मेरा साहस बहुत बढ़ गया है।

हमारे एक मित्र हैं पं० जीवनलाल अवस्थी महानगर लखनऊ। उनके गांव में बीमारों की सेवा का सौभाग्य हमें प्राप्त है। वहीं पर एक स्त्री को सात मास का गर्भ था। उस कठिन रोग ग्रस्त हुई का केस मेरे ही हाथमें था। जब मैं रात को १०बजे हालत देखने गया तो दांती बंध गई थी कोई उपचार न करके मैंने गायत्री जप करना शुरू किया आधे घंटे बाद देखा तो मरीज का टेम्परेचर १०० था दांती खुल चुकी थी रोगिणी अच्छी होगई ऐसे ही और भी कई रोगियों पर गायत्री के चमत्कारिक प्रयोग हुए उनकी कितनी ही कठिनाइयों में सहायता करता हूं।

स्वस्थता और सात्विकता।

(श्री डाह्याभाई रामचन्द्र मेहता, अहमदाबाद)

मुझे गायत्री माता की उपासना में बहुत लाभ हुआ है। गायत्री उपासना ही मेरा नित्य नियमित विधान है। मैंने गायत्री उपासना का यथा शक्ति प्रचार भी किया है जिससे बहुत लोगों ने लाभ उठाया है। कई आदमियों को गायत्री उपासना से स्वप्न द्वारा उनके प्रश्नों के साफ साफ उत्तर मिले हैं। अनेकों को गायत्री द्वारा मनोवाञ्छित लाभ हुए हैं।

श्री गायत्री माता की कृपा से मेरी आयु ७७ वर्ष होने पर भी शरीर अच्छा है। मन, वाणी कर्म सब में स्वस्थता और सात्विकता है और सब कार्य अच्छी तरह चल रहा है।

गायत्री साधना से भाग्योदय।

(पं० भूरेलाल ब्रह्मचारी, वैद्य, हर्रई छिंदवाड़ा)

स० १९९५,९६ का जिक्र है कि पं० नर्मदाप्रसाद शास्त्री भदरस, कानपुर के रहने वाले थे भाग्यवश हर्रई के राज मंदिर में आकर पुजारी होगए थे, उनकी उद्भट विद्वत्ता पर मैं मुग्ध होगया, और उनसे विनय की कि मैं इस वक्त निठल्ला हूं व्यर्थ आ आकर आपका समय बर्बाद किया करता हूं, कोई ऐसा उपाय बताइये कि मेरा लोक परलोक दोनों बनें। उन्होंने कृपाकर मुझ से कहा कि गायत्री का जप किया करो मैंने उनके आदेशानुसार गायत्री पूजन शुरू किया और सवा लाख गायत्री का मंत्र जपने का संकल्प किया, दिन रात में जब निश्चिन्त होता था उसी वक्त स्नान कर साधना करता था, जितने दिन मैंने साधना की उतने दिन एक प्रकार का उल्लास सा मेरे दिल में बना रहता था और आनन्द मय दिन व्यतीत करता था।

इसके बाद ही मैं रोजी से लग गया पं० जी का कहना मुझे अच्छी तरह याद है कि जो भी कुछ निश्चय होगया है उसका फल अवश्य मिलेगा। रोजी से आज तक उत्तरोत्तर मेरी वृद्धि होकर धनधान्य से परिपूर्ण हूं। जिस कार्य में हाथ डालता हूं उसी में भगवान की दया से सफलता हुई और होती जाती है अनेक तरह के संकटों का निवारण आप ही आप हो जाता है इतना तो अनुभव मेरे खुद का गायत्री मंत्र जप करने का है।

गायत्री की कृपा से प्रिंसिपल बना।

(पं० लक्ष्मीकान्त झा व्याकरण साहित्याचार्य, झांसी)

यह सेवक मिथिला के (दरभङ्गा) चौमथ ग्राम वास्तव्य-राज ज्योतिषी पण्डित प्रकाण्ड श्रीयुत कृपालु झा का लक्ष्मी कान्त झा नामक पुत्र है। यह यज्ञोपवीत संस्कार के अनन्तर गृहोपदेश से ही कुछ गायत्री मन्त्र जप किया करता था। किन्तु दैव योग से भारताकाश में देदीप्यमान पण्डित प्रवर स्वर्गीय दिवाकर दत्त चतुर्वेदी से शब्द शास्त्र पढ़ने खगड़िया (मुंगेर) गया। वहां श्यामा के प्रसाद भूत श्यामादत्तजी का गायत्री मन्त्र पर सुन्दर प्रवचन हुआ। उस प्रवचन का पूर्ण प्रभाव इस सेवक पर पड़ा। उसी दिन मैंने प्रतिज्ञा की कि आज से १००० एक सहस्त्र गायत्री मन्त्र जप करके ही पठन पाठन करूँगा। उस समय मैंने मध्यमा परीक्षा पास करली थी। गायत्री माता की ऐसी कृपा हुई कि पढ़ने में चित्त अधिक लगने लगा उसी वर्ष से आचार्य तक प्रथम श्रेणी में ही नाम निकला। तथा नाम निकलने के पूर्व ही १९३८ ई० में श्रीरामचन्द्र सारस्वत संस्कृत पाठशाला पारेश्वर झांसी से प्रधानाध्याय की स्वीकृति मिली। किन्तु यहां आकर गायत्री माता की सेवा में कुछ न्यूनता कर दी। परन्तु गायत्री माता का अनुराग इस पुत्र पर अधिक था। अतः एक मित्र मिल गये। मित्र

ने कहा कि लश्कर में आपकी ओर के ओझाजी आयेहैं। वे विपरीत प्रत्यङ्गिरा सिद्ध किये हुएथे। एक सेठ का एक मात्र पुत्ररत्न १६ वर्ष का था। उसके भाईने शत्रुता से ओझाजी से मिलकर उस बच्चे पर विपरीत प्रत्यङ्गिरा का प्रयोग करवाया। तीसरे दिन वह सेठ का बेटा जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़ा। उस समय हाहाकार सुनकर एक ब्रह्म-निष्ठ, गायत्री जापी ब्राह्मण वहां आ पहुंचे। उन्होंने पूछा क्या बात है। सब समाचार ज्ञात होने पर ब्राह्मण ने गायत्री मन्त्र से छींटा दिया। जल के पड़ने से वह बालक उठकर होश में आया। फिर ब्राह्मण के निकलने पर वही दशा हुई। इस प्रकार तीन बार होने पर सेठ ब्राह्मण के चरणों पर अपना शिर रख दिया। ब्राह्मण ने कहा मैं जादू टोना नहीं जानता केवल नित्य गायत्री मन्त्र १००० एक सहस्र जप करता हूं। यदि मेरे रहने से तेरा बेटा बच जाय तो लो ६ दिन गायत्री मन्त्र का अनुष्ठान करता हूं। फल यह हुआ कि छठे दिन भगवती ने प्रयोग कर्ता के शिर को पेंठकर प्राण ले लिया। वह बालक बच गया। इस सच्ची घटना को सुनकर फिर भी मैंने अपने नियमानुसार जप आरम्भ किया। जिसके प्रभाव से १६४३ में प्रथमा का परीक्षक १६४४ से मध्यमा का परीक्षक हुआ।

१६४७ में साहित्याचार्य १६४८ में हिन्दी साहित्य रत्न तथा वेद शास्त्री आदि किया इसके अलावा और भी अघटित घटना जिससे परिचय नहीं उससे परिचय होना उत्तम से उत्तम सन्मान महापुरुषों से आदर हुआ। इस वर्ष गायत्री माता की पूर्ण कृपा हुई कि यह तुच्छ सेवक दुर्लभ चन्द्र संस्कृत कालेज झांसी का प्रिंसपल होगया। गायत्री मन्त्र के जापक इसका दुरुपयोग करें या सदुपयोग दोनों में इसका पूर्ण प्रभाव है। किन्तु चिन्तामणि को पाकर भी जिसने दुरुपयोग चिन्ता में अपना अमूल्य रत्न खो दिया। उसने सब कुछ खो दिया।

गायत्री सिद्ध श्री काठिया बाबा।

वृन्दावन में कुछ ही समय पर्व एक परमसि[द्ध] महात्मा हुए हैं जिनका पूरा नाम तो महात्[मा] रामदास था। पर काठ की कोपीन लगाने [के] कारण उन्हें काठिया बाबा कहा जाता है। उन[्होंने] अपनी साधना का वर्णन इस प्रकार किया है-

"विद्याध्ययन करने के अनन्तर मैं पितृ[गृह] में लौट आया। मुझे सब से पहले गायत्री मन[्त्र] को सिद्ध करने की इच्छा हुई। हमारे ग्राम [के] अन्त भाग में एक स्थान पर एक विशाल वट वृ[क्ष] था, यह वृक्ष हमारे पिता के बगीचे के समी[प] था। मैंने गायत्री मन्त्र का शाप, शापोद्धार औ[र] कवच आदि यथा विधि सीखकर उस वट वृ[क्ष] के नीचे बैठकर और विधि विधान के सा[थ] गायत्री मंत्र का जप करना आरंभ कर दिया सवा लक्ष जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होत[ा] होता है यह जानकर मैंने इसी मात्रा में ज[प] करना निश्चित किया और एकान्त मन से ज[प] करना आरंभ कर दिया। जब कि एक लक्ष ज[प] पूरा हो गया और पचीस हजार जप करना शे[ष] रहा तभी अकस्मात् आकाशवाणी हुई। उ[स] वाणी ने मुझे इस तरह आदेश दिया—बच्चे तुम शेष का पचीस हजार जप ज्वालामुखी प[र] जाकर पूर्ण करो। इस तरह करने पर तुम[्हें] सिद्धि मिलेगी।

इस आकाशवाणी को सुनने के पश्चात् मैं खूब उत्साहित हुआ और शीघ्र ही ज्वालामुख[ी] की तरफ चल दिया। मेरो भाई का एक बेट[ा] जो समवयस्क था, मेरा बड़ा सहचर था, व[ह] मेरे साथ हो लिया। ज्वालामुखी और हमा[रे] पिता के घर में ३०-४० कोस की दूरी का अन्त[र] है रास्ते में ही हमें एक तेजपुंज महात्मा मिले उन्हें देखकर मैं उनकी ओर आकर्षित हुआ और मैंने उनसे वैराग्य की दीक्षा ले ली। मेर[ा] साथी जो मेरा भ्रातृ बेटा था उसने वैरागी होने

से मुझे रोका परन्तु मैंने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया तब वह घर लौट गया और पिता को लिवा लाया। मेरे सन्यासी होजाने का उन्हें दुःख हुआ और वे गृहस्थ में लौट आने के लिए कहने लगे। डर और भय भी दिखाया जब वे सफल न हुए तो मेरे गुरुजी को कहकर मुझे अपने गांव ले आये। वहां मैंने अपने उसी वट वृक्ष के नीचे आसन लगाया जहां कि पहले गायत्री की साधना की थी। उसी रात हठात् आकाशमण्डल का भेदन करती हुई गायत्री देवी आविर्भूत हुई और बोलीं—"वत्स, मैं तुम्हें सिद्ध होगई। अब तुम्हें और अधिक जप करने की आवश्यकता नहीं। मैं प्रसन्न हूं, तुम वर मांगो।" मैंने यथा-विधि अभिवादन पूर्वक कहा—माता, मैं इस समय साधु होगया हूं, मैंने संसार छोड़ दिया है, अब कोई वासना नहीं है। इस समय किसी भी वर को मांगने की आवश्यकता नहीं है। तुम मेरे ऊपर प्रसन्न रहो, यही मेरा वर है। देवी एवमस्तु कहकर अन्तर्ध्यान होगई।

गायत्री की सिद्धि प्राप्त कर लेने के अनन्तर ऐसा कुछ भी शेष नहीं था जो काठिया बाबा को प्राप्त न हो। उनको दूर दृष्टि प्राप्त थी, वे कहीं की कोई भी बात जान लेते थे और यदि उनके शिष्यों पर संकट आता तो वे उसे दूर भी कर देते। वाक् सिद्धि तो बड़ी विलक्षण थी। प्रायः जो महापुरुष होते हैं वे अपने आपको छिपाये रखते हैं। बाबाजी में आत्मगोपन की अलौकिक शक्ति थी। द्रव्य का अभाव तो कभी देखा नहीं गया यहाँ तक कि उनके परिचारकों को आश्चर्य होता था। बाबाजी काठ की लँगोटी लगाते थे, उनके परिचारक समझते कि बाबाजी ने बहुत सी अशर्फी जमा करली हैं और वे वहीं रखते हैं और इसी लिए वे काठ की लंगोटी लगाये हैं। उनके परिचारकों ने उन्हें तीन बार विष-संखिया-और सो भी एक साथ दो दो तोला तक, लेकिन फिर भी उसका उन पर विशेष असर नहीं हुआ।

इन्द्रिय जय की शक्ति तो उनकी गजब की थी, उन्हें कई बार-कई स्त्रियों ने गिराने की कोशिश की परन्तु किसी को सफलता नहीं मिली।

उनका आत्म तेज इतना बढ़ गया था कि कोई भी उनके सामने नहीं ठहर पाता था, जहां वे जाते बड़े से बड़े तक सब उन्हें आत्म समर्पण कर देते।

अकेली गायत्री की साधना ने ही उन्हें महान सिद्ध बना दिया था। वे करने और न करने प्रत्येक कार्य को करने की शक्ति रखते थे और इसे उन्होंने कई बार अपने भक्तों के कल्याण के लिए प्रकट भी किया। लेकिन वे विज्ञापन और प्रसिद्धि से हमेशा ही दूर रहे। अपनी सिद्धता का कभी उन्होंने प्रदर्शन नहीं किया।

प्रतिष्ठा और सम्पन्नता चौगुनी।

(पं० तुलसीराम शर्मा, वृन्दावन)

—+—

"लगभग १० वर्ष हुए होंगे। श्री उड़िया बाबा की प्रेरणा से हाथरस निवासी लाला गणेशीलाल जी ने गंगा किनारे कर्णवास में चौबीस लक्ष गायत्री का अनुष्ठान कराया था। उस समय से गणेशीलालजी की आर्थिक दशा दिन दिन ऊँची उठती गई और अब उनकी प्रतिष्ठा तथा सम्पन्नता उस समय से चौगुनी है। मैं उस अनुष्ठान में मौजूद था।"

आर्थिक कष्ट की निवृत्ति

(पं० हरिनारायण शर्मा काव्यतीर्थ, प्रतापगढ़)

मेरे एक निकट संबंधी ने एक महात्मा से काशी में धन प्राप्ति का उपाय पूछा। महात्माजी ने उपदेश किया कि ४ बजे प्रातःकाल उठकर शौचादि से निवृत्त होकर स्नान संध्या के बाद खड़े होकर हजार गायत्री जप नित्य किया करो। उसने ऐसा ही किया, फलस्वरूप उसका आर्थिक कष्ट दूर होगया।

अधूरी साधना में भी दिव्य अनुभव ।

(पं० रूपलाल शर्मा, विद्यारत्न, कानपुर)

एक समय था जब मेरे मनमें गायत्री सिद्धि की बड़ी भारी अभिलाषा रहती थी। मैं पंडितों से पूछता तो कोई कहता कलियुग में गायत्री की सिद्धि होना बड़ा मुश्किल है, कोई कहता गायत्री को शाप लगा हुआ है इससे वह निष्फल होती है। कोई कहता सिद्धि करना हँसी खेल नहीं है, उलटा परिणाम हुआ तो लेने के देने पड़ जायेंगे। इस प्रकार के निराशा उत्पन्न करने वाले आदेश सुनकर भी मेरा उत्साह ठंडा नहीं हुआ। मैं गायत्री विज्ञान के अनुभवी गुरु की खोज में लगा ही रहा।

एक बार की अचानक भेंट में एक दक्षिणात्म सज्जन सोमनाथजी ने मुझे गवालियर में गायत्री विद्या के अनुभवी गुरु का पता बताया। मैं उनके पास गवालियर पहुंचा। उन्होंने कृपा पूर्वक अनुष्ठान की सारीविधि मुझे सविस्तार समझादी और काशी जाकर साधना करनेका आदेश किया।

नियत विधि—विधान के साथ मैंने काशी के मणिकर्णिका घाट पर अनुष्ठान आरंभ कर दिया। ग्यारहवें दिन से ही मुझे दिव्य से अनुभव होने लगे। स्वप्न में मुझे एक दिव्य मूर्ति देवी के दर्शन होते वह मुझसे कुछ कहती, उसके होट हिलते, पर मेरी समझ में कुछ न आता। यह स्वप्न बार बार दिखाई दिया। देवी की वाणी अधिक स्पष्ट होती जाती थी, ऐसा लगता था कि बहुत जल्द मैं उस वाणी को समझ सकूँगा।

पच्चीसवें दिन मैं घाट पर बैठा जप कर रहा था कि अचानक सफेद गैस की तरह एक भारी प्रकाश चमका, उससे मैं घबराकर हकाबका सा रह गया। मेरी आंखें मुँद गईं। अधिक न देख सका। उसी रात्रि को मैंने स्वप्न देखा कि एक शुभ्र वस्त्र धारी तेजवान् ब्राह्मण मुझसे कह र[ह]े है कि "तुम अपने घर चलेजाओ—वहां अ[ब] काम है।" मेरी नींद खुलगई और स्वप्न के सं[बंध] में सोचने लगा।

दूसरे दिन सबेरे ही मुझे तार मिला तुम्हारे पिता सख्त बीमार हैं घर चले आ[ओ] मैं अनुष्ठान अधूरा छोड़कर घर चला गया। नई परिस्थितियां आईं, नई जिम्मेदारियों में फं[स] अनुष्ठान अधूरा का अधूरा रहा। सोचता हूं उसे फिर आरंभ करूँ। थोड़े ही दिन की सा[धना] में मुझे जो दिव्य अनुभव आये उनके आधार मेरा विश्वास है कि पूरी साधना करने वालों अवश्य ही आशा जनक लाभ होगा।

'अखंडज्योति' के नये ग्राहकों को सू[चना]

साधारणतः प्रत्येक मासिक पत्रिका के ग्र[ाहक] उस मास से बनाये जाते हैं जिस मास से उसका वर्ष आरंभ होता है। "कल्याण" [आदि] पत्रों का यही नियम है। अखंड ज्योति का [वर्ष] जनवरी से आरम्भ होता है इसलिए जो ग्र[ाहक] नये ग्राहक बनते हैं उन्हें जनवरी से लेकर [उस] मास तक के अंक भेजदिये जाते हैं और दिस[म्बर] तक शेष अंक भी बराबर पहुंचते रहते हैं।

'अखंडज्योति' खबरें छापने वाला अ[खबार] नहीं है जो दूसरे ही दिन रद्दी होजाय [इसके] अंक एक प्रकार की पुस्तकें हैं जो कभी पु[रानी] नहीं होते। पर जिन्हें विशेष आग्रह हो वे लिखदें कि हम चालू मास से ग्राहक [बनना] चाहते हैं। उनके लिए वैसी व्यवस्था कर देने भी हम किसी प्रकार प्रयत्न करेंगे ही पर सज्जनों की मांग और भी विचित्र होती है वे वर्षके आरंभसे ग्राहक बनना चाहते हैं न चालू [मास] से। वरन मई या अप्रेल से ग्राहक बनने का [आग्रह] करते हैं। ऐसी मांगों को पूरा करने में हम [सर्वथा] असमर्थ हैं।

क्षमा प्रार्थना।

(लेखक—पं० श्रीरमाशंकरजी मिश्र 'श्रीपति')

---

(१)

न मंत्रोंको जाना नहिं यतन आती स्तुति नहीं,
न जाना है माता [illegible] स्तुति ही,
न मुद्राएँ आतीं जननि ? नहिं आता विलपना,
हमें आता तेरा अनुसरण ही क्लेशहर जो।

(२)

न आती पूजाकी विधि न धन आलस्ययुत मैं,
रहा कर्तव्योंसे विमुख चरणोंमें रति नहीं,
क्षमा दो हे माता? अयि सफल उद्धारिणि शिवे
कुपुत्रोंको देखा कबहुंक कुमाता नहिं सुनी।

(३)

धरित्रीमें माता सरल शिशु तेरे बहुत हैं,
उन्हींमें सो मैं भी सरल शिशु तेरा जननि हूं,
अतः हे कल्याणी समुचित नहीं मोहि तजना,
कुपुत्रोंको देखा कबहुंक कुमाता नहिं सुनी।

(४)

जगन्माता अंबे तव चरणसेवा नहिं रची,
तुम्हारी पूजामें नहिं प्रचुर द्रव्यादिक दिया,
अहो! तो भी माता तुम अमित स्नेहार्द्र रहतीं,
कुपुत्रोंको देखा कबहुंक कुमाता नहिं सुनी।

(५)

सुरोंकी सेवाएँ विविध विधिकी, हैं सब तजीं,
पचासीसे भी हे जननि वय बीती अधिक है,
नहीं होवी तेरी मुझपर कृपा तो अब भला,
निरालंबी लंबोदर-जननि जाएँ हम कहां ?

(६)

मनोहारी वाणी अधम जन चांडाल कहते,
दरिद्री होते हैं अभय बहु द्रव्यादिक भरे,
अपर्णे ? कर्णोंमें यह फल जनोंके प्रविशना,
अहो! तो भी आती जपविधि किसे है जननि हे!

(७)

चिताभस्मालेपी गरल अशनी दिक्पट धरे,
जटाधारी कंठे भुजगपति माला पशुपति,
कपाली पाते हैं इह जग जगन्नाथपदवी,
शिवे! तेरी पाणिग्रहण परिपाटी फल यही।

(८)

न है मोक्षाकांक्षा नहिं विभववाञ्छा हृदयमें,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छा अब नहीं,
यही यांचा मेरी निज तनयको रक्षित करो,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी जपति जो।

(९)

नाना प्रकार उपचार किए नहीं हैं,
रूखा न चिंतन किया वचसा कभी भी,
श्यामे! अनाथ मुझको लख जो कृपा हो,
तो है यही उचित अंब! तुम्हें सदा ही।

(१०)

आपत्तिसे व्यथित हो तुमको भजूँ मैं,
करो कृपा हे करुणार्णवे! शिवे!!
मेरे शठत्वपर आप न ध्यान देना,
क्षुधा तृषार्ता जननी पुकारते।

(११)

जगदंब विचित्र यह क्या, परिपूर्ण करुणा यदि करो,
अपराध करे तनय तो, जननी नहिं अनादर करे।

॥ श्रीगायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

ध्यानम्
रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां
रक्तारक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ।
गायत्री कमलासनां करतलव्यानद्धकुण्डाम्बुजां
पद्माक्षीं च वरस्रजञ्च दधतीं हंसाधिरूढां भजे ॥

ॐ तत्काररूपा तत्वज्ञा तत्पदार्थस्वरूपिणि ।
तपस्स्व्याध्यायनिरता तपस्विजननन्नुता ॥ १॥

तत्कीर्तिगुणसम्पन्ना तथ्यवाक्च तपोनिधिः ।
तत्वोपदेशसम्बन्धा तपोलोकनिवासिनी ॥ २॥

तरुणादित्यसङ्काशा तप्तकाञ्चनभूषणा ।
तमोपहारिणि तन्त्री तारिणिताररूपिणि ॥ ३॥

तलादिभुवनान्तस्था तर्कशास्त्रविधायिनी ।
तन्त्रसारा तन्त्रमाता तन्त्रमार्गप्रदर्शिनी ॥ ४॥

तत्वा तन्त्रविधानज्ञा तन्त्रस्था तन्त्रसाक्षिणि ।
तदेकध्याननिरता तत्वज्ञानप्रबोधिनी ॥ ५॥

तन्नाममन्त्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता ।
साकाररूपा सावित्री सर्वरूपा सनातनी ॥ ६॥

संसारदुःखशमनी सर्वयागफलप्रदा ।
सकला सत्यसङ्कल्पा सत्या सत्यप्रदायिनी ॥ ७॥

सन्तोषजननी सारा सत्यलोकनिवासिनी ।
समुद्रतनयाराध्या सामगानप्रिया सती ॥ ८॥

समानी सामदेवी च समस्तसुरसेविता ।
सर्वसम्पत्तिजननी सद्गुणा सकलेष्टदा ॥ ९॥

सनकादिमुनिध्येया समानाधिकवर्जिता ।
साध्या सिद्धा सुधावासा सिद्धिस्साध्यप्रदायिनी ॥ १०॥

सद्युगाराध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा ।
सर्ववेदान्तनिलया सर्वशास्त्रार्थगोचरा ॥ ११॥

सहस्रदलपद्मस्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी ।

समया समयाचारा सदसद्ग्रन्थिभेदिनी ॥ १२॥

सप्तकोटिमहामन्त्रमाता सर्वप्रदायिनी ।
सगुणा सम्भ्रमा साक्षी सर्वचैतन्यरूपिणी ॥ १३॥

सत्कीर्तिस्सात्विका साध्वी सच्चिदानन्दरूपिणी ।
सङ्कल्परूपिणी सन्ध्या सालग्रामनिवासिनी ॥ १४॥

सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी ।
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधनतत्परा ॥ १५॥

विप्रप्रीर्विप्रकल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी ।
विप्रमन्दिरमध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥ १६॥

विप्रोपाधिविनिर्भेत्री विप्रहत्याविमोचनी ।
विप्रत्राता विप्रगोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी ॥ १७॥

विप्रभोजनसन्तुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी ।
विष्णुमाया विष्णुवन्द्या विष्णुगर्भा विचित्रिणी ॥ १८॥

वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णुमायाविलासिनी ।
विकाररहिता विश्वविज्ञानघनरूपिणी ॥ १९॥

विबुधा विष्णुसङ्कल्पा विश्वामित्रप्रसादिनी ।
विष्णुचैतन्यनिलया विष्णुस्वा विश्वसाक्षिणी ॥ २०॥

विवेकिनी वियद्रूपा विजया विश्वमोहिनी ।
विद्याधरी विधानज्ञा वेदतत्वार्थरूपिणी ॥ २१॥

विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमङ्गला ।
विश्वम्भरासमाराध्या विश्वभ्रमणकारिणी ॥ २२॥

विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठीविवर्धिनी ।
विवाहरहिता विन्ध्या विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ २३॥

विद्याविद्याकरी विद्या विद्याविद्याप्रबोधिनी ।
विमला विभवा वेद्या विश्वस्था विविधोज्ज्वला ॥ २४॥

वीरमध्या वरारोहा वितन्त्रा विश्वनायिका ।
वीरहत्याप्रशमनी विनम्रजनपालिनी ॥ २५॥

वीरधीर्विविधाकारा विरोधिजननाशिनी ।
तुकाररूपा तुर्यश्रीस्तुलसीवनवासिनी ॥ २६॥

तुरङ्गी तुरगारूढा तुलादानफलप्रदा ।

तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टिपुष्टिप्रदायिनी ॥ २७॥

तुरङ्गमप्रसन्तुष्टा तुलिता तुल्यमध्यगा ।
तुङ्गोत्तुङ्गा तुङ्गकुचा तुहिनाचलसंस्थिता ॥ २८॥

तुम्बुरादिस्तुतिप्रीता तुषारशिखरीश्वरी ।
तुष्टा च तुष्टिजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥ २९॥

तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुर्यरूपिणी ।
तुरीयगुणगम्भीरा तुर्यनादस्वरूपिणी ॥ ३०॥

तुर्यविद्यालास्यतुष्टा तूर्यशास्त्रार्थवादिनी ।
तुरीयशास्त्रतत्वज्ञा तूर्यनादविनोदिनी ॥ ३१॥

तूर्यनादान्तनिलया तूर्यानन्दस्वरूपिणी ।
तुरीयभक्तिजननी तुर्यमार्गप्रदर्शिनी ॥ ३२॥

वकाररूपा वागीशी वरेण्या वरसंविधा ।
वरा वरिष्ठा वैदेही वेदशास्त्रप्रदर्शिनी ॥ ३३॥

विकल्पशमनी वाणी वाञ्छितार्थफलप्रदा ।
वयस्था च वयोमध्या वयोवस्थाविवर्जिता ॥ ३४॥

वन्दिनी वादिनी वर्या वाङ्मयी वीरवन्दिता ।
वानप्रस्थाश्रमस्था च वनदुर्गा वनालया ॥ ३५॥

वनजाक्षी वनचरी वनिता विश्वमोहिनी ।
वसिष्ठावामदेवादिवन्द्या वन्द्यस्वरूपिणी ॥ ३६॥

वैद्या वैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुन्धरा ।
वसुमाता वसुत्राता वसुजन्मविमोचनी ॥ ३७॥

वसुप्रदा वासुदेवी वासुदेव मनोहरी ।
वासवार्चितपादश्रीर्वासवारिविनाशिनी ॥ ३८॥

वागीशी वाङ्मनस्थायी वशिनी वनवासभूः ।
वामदेवी वरारोहा वाद्यघोषणतत्परा ॥ ३९॥

वाचस्पतिसमाराध्या वेदमाता विनोदिनी ।
रेकाररूपा रेवा च रेवातीरनिवासिनी ॥ ४०॥

राजीवलोचना रामा रागिणिरतिवन्दिता ।
रमणीरामजप्ता च राज्यपा राजताद्रिगा ॥ ४१॥

राकिणी रेवती रक्षा रुद्रजन्मा रजस्वला ।

रेणुकारमणी रम्या रतिवृद्धा रता रतिः ॥ ४२॥

रावणानन्दसन्धायी राजश्री राजशेखरी ।
रणमद्या रथारूढा रविकोटिसमप्रभा ॥ ४३॥

रविमण्डलमध्यस्था रजनी रविलोचना ।
रथाङ्गपाणि रक्षोघ्नी रागिणी रावणार्चिता ॥ ४४॥

रम्भादिकन्यकाराध्या राज्यदा राज्यवर्धिनी ।
रजताद्रीशसक्थिस्था रम्या राजीवलोचना ॥ ४५॥

रम्यवाणी रमाराध्या राज्यधात्री रतोत्सवा ।
रेवती च रतोत्साहा राजहृद्रोगहारिणी ॥ ४६॥

रङ्गप्रवृद्धमधुरा रङ्गमण्डपमध्यगा ।
रञ्जिता राजजननी रम्या राकेन्दुमध्यगा ॥ ४७॥

राविणी रागिणी रञ्ज्या राजराजेश्वरार्चिता ।
राजन्वती राजनीती रजताचलवासिनी ॥ ४८॥

राघवार्चितपादश्री राघवा राघवप्रिया ।
रत्ननूपुरमध्याढ्या रत्नद्वीपनिवासिनी ॥ ४९॥

रत्नप्राकारमध्यस्था रत्नमण्डपमध्यगा ।
रत्नाभिषेकसन्तुष्टा रत्नाङ्गी रत्नदायिनी ॥ ५०॥

णिकाररूपिणी नित्या नित्यतृप्ता निरञ्जना ।
निद्रात्ययविशेषज्ञा नीलजीमूतसन्निभा ॥ ५१॥

नीवारशूकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ।
नित्योत्सवा नित्यपूज्या नित्यानन्दस्वरूपिणी ॥ ५२॥

निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिन्ता निरुपद्रवा ।
निस्संशया निरीहा च निर्लोभा नीलमूर्धजा ॥ ५३॥

निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता ।
नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥ ५४॥

नीलग्रीवा निराहारा निरञ्जनवरप्रदा ।
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥ ५५॥

नारायणी निरीहा च निर्मला निर्गुणप्रिया ।
निश्चिन्ता निगमाचारनिखिलागम च वेदिनी ॥ ५६॥

निमेषानिमिषोत्पन्ना निमेषाण्डविधायिनी ।
निवातदीपमध्यस्था निर्विघ्ना नीचनाशिनी ॥ ५७॥

नीलवेणी नीलखण्डा निर्विषा निष्कशोभिता ।
नीलांशुकपरीधाना निन्दघ्नी च निरीश्वरी ॥ ५८॥

निश्वासोच्छ्वासमध्यस्था नित्ययानविलासिनी ।
यङ्काररूपा यन्त्रेशी यन्त्री यन्त्रयशस्विनी ॥ ५९॥

यन्त्राराधनसन्तुष्टा यजमानस्वरूपिणी ।
योगिपूज्या यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ॥ ६०॥

यमघ्नी यमकल्पा च यशःकामा यतीश्वरी ।
यमादीयोगनिरता यतिदुःखापहारिणी ॥ ६१॥

यज्ञा यज्वा यजुर्गेया यज्ञेश्वरपतिव्रता ।
यज्ञसूत्रप्रदा यष्ट्री यज्ञकर्मफलप्रदा ॥ ६२॥

यवाङ्कुरप्रिया यन्त्री यवदघ्नी यवार्चिता ।
यज्ञकर्त्री यज्ञभोक्त्री यज्ञाङ्गी यज्ञवाहिनी ॥ ६३॥

यज्ञसाक्षी यज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षिणी ।
भकाररूपा भद्रेशी भद्रकल्याणदायिनी ॥ ६४॥

भक्तप्रिया भक्तसखा भक्ताभीष्टस्वरूपिणी ।
भगिनी भक्तसुलभा भक्तिदा भक्तवत्सला ॥ ६५॥

भक्तचैतन्यनिलया भक्तबन्धविमोचनी ।
भक्तस्वरूपिणी भाग्या भक्तारोग्यप्रदायिनी ॥ ६६॥

भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी ।
भास्करी भैरवी भोग्या भवानी भयनाशिनी ॥ ६७॥

भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली भयङ्करी ।
भगनिष्यन्दिनी भूम्नी भवबन्धविमोचनी ॥ ६८॥

भीमा भवसखा भङ्गीभङ्गुरा भीमदर्शिनी ।
भल्ली भल्लीधरा भीरुर्भेरुण्डा भीमपापहा ॥ ६९॥

भावज्ञा भोगदात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा ।
भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥ ७०॥

भ्रामरी भ्रमरी भारी भवसागरतारिणी ।
भण्डासुरवधोत्साहा भाग्यदा भावमोदिनी ॥ ७१॥

गोकाररूपा गोमाता गुरुपत्नी गुरुप्रिया ।
गोरोचनप्रिया गौरी गोविन्दगुणवर्धिनी ॥ ७२॥

गोपालचेष्टासन्तुष्टा गोवर्धनविवर्धिनी ।
गोविन्दरूपिणी गोप्त्री गोकुलानांविवर्धिनी ॥ ७३॥

गीता गीतप्रिया गेया गोदा गोरूपधारिणी ।
गोपी गोहत्यशमनी गुणिनी गुणिविग्रहा ॥ ७४॥

गोविन्दजननी गोष्ठा गोप्रदा गोकुलोत्सवा ।
गोचरी गौतमी गङ्गा गोमुखी गुणवासिनी ॥ ७५॥

गोपाली गोमया गुम्भा गोष्ठी गोपुरवासिनी ।
गरुडा गमनश्रेष्ठा गारुडा गरुडध्वजा ॥ ७६॥

गम्भीरा गण्डकी गुण्डा गरुडध्वजवल्लभा ।
गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुणोद्भवा ॥ ७७॥

देकाररूपा देवेशी दृग्रूपा देवतार्चिता ।
देवराजेश्वरार्धाङ्गी दीनदैन्यविमोचनी ॥ ७८॥

देकालपरिज्ञाना देशोपद्रवनाशिनी ।
देवमाता देवमोहा देवदानवमोहिनी ॥ ७९॥

देवेन्द्रार्चितपादश्री देवदेवप्रसादिनी ।
देशान्तरी देशरूपा देवालयनिवासिनी ॥ ८०॥

देशभ्रमणसन्तुष्टा देशस्वास्थ्यप्रदायिनी ।
देवयाना देवता च देवसैन्यप्रपालिनी ॥ ८१॥

वकाररूपा वाग्देवी वेदमानसगोचरा ।
वैकुण्ठदेशिका वेद्या वायुरूपा वरप्रदा ॥ ८२॥

वक्रतुण्डार्चितपदा वक्रतुण्डप्रसादिनी ।
वैचित्र्यरूपा वसुधा वसुस्थाना वसुप्रिया ॥ ८३॥

वषट्कारस्वरूपा च वरारोहा वरासना ।
वैदेही जननी वेद्या वैदेहीशोकनाशिनी ॥ ८४॥

वेदमाता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी ।
वेदान्तवादिनी चैव वेदान्तनिलयप्रिया ॥ ८५॥

वेदश्रवा वेदघोषा वेदगीता विनोदिनी ।
वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञा वेदमार्ग प्रदर्शिनी ॥ ८६॥

वैदिकीकर्मफलदा वेदसागरवाडवा ।
वेदवन्द्या वेदगुह्या वेदाश्वरथवाहिनी ॥ ८७॥

वेदचक्रा वेदवन्द्या वेदाङ्गी वेदवित्कविः ।
सकाररूपा सामन्ता सामगान विचक्षणा ॥ ८८॥

साम्राज्ञी नामरूपा च सदानन्दप्रदायिनी ।
सर्वदृक्सन्निविष्टा च सर्वसम्प्रेषिणीसहा ॥ ८९॥

सव्यापसव्यदा सव्यसध्रीची च सहायिनी ।
सकला सागरा सारा सार्वभौमस्वरूपिणी ॥ ९०॥

सन्तोषजननी सेव्या सर्वेशी सर्वरञ्जनी ।
सरस्वती समाराध्या सामदा सिन्धुसेविता ॥ ९१॥

सम्मोहिनी सदामोहा सर्वमाङ्गल्यदायिनी ।
समस्तभुवनेशानी सर्वकामफलप्रदा ॥ ९२॥

सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञानप्रदायिनी ।
सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःखविमोचनी ॥ ९३॥

सर्वरोगप्रशमनी सर्वपापविमोचनी ।
समदृष्टिस्समगुणा सर्वगोप्त्री सहायिनी ॥ ९४॥

सामर्थ्यवाहिनि साङ्ख्या सान्द्रानन्दपयोधरा ।
सङ्कीर्णमन्दिरस्थाना साकेतकुलपालिनी ॥ ९५॥

संहारिणी सुधारूपा साकेतपुरवासिनी ।
सम्बोधिनी समस्तेशी सत्यज्ञानस्वरूपिणी ॥ ९६॥

सम्पत्करी समानाङ्गी सर्वभावसुसंस्थिता ।
सन्ध्यावन्दनसुप्रीता सन्मार्गकुलपालिनी ॥ ९७॥

सञ्जीविनी सर्वमेधा सभ्या साधुसुपूजिता ।
समिद्धा सामिधेनी च सामान्या सामवेदिनी ॥ ९८॥

समुत्तीर्णा सदाचारा संहारा सर्वपावनी ।
सर्पिणी सर्पमाता च समादानसुखप्रदा ॥ ९९॥

सर्वरोगप्रशमनी सर्वज्ञत्वफलप्रदा ।
सङ्क्रमा समदा सिन्धुः सर्गादिकरणक्षमा ॥ १००॥

सङ्कटा सङ्कटहरा सकुङ्कुमविलेपना ।
सुमुखा सुमुखप्रीता समानाधिकवर्जिता ॥ १०१॥

संस्तुता स्तुतिसुप्रीता सत्यवादी सदास्पदा ।
धीकाररूपा धीमाता धीरा धीरप्रसादिनी ॥ १०२॥

धीरोत्तमा धीरधीरा धीरस्था धीरशेखरा ।
धृतिरूपा धनाढ्या च धनपा धनदायिनी ॥ १०३॥

धीरूपा धीरवन्द्या च धीप्रभा धीरमानसा ।
धीगेया धीपदस्था च धीशाना धीप्रसादिनी ॥ १०४॥

मकाररूपा मैत्रेया महामङ्गलदेवता ।
मनोवैकल्यशमनी मलयाचलवासिनी ॥ १०५॥

मलयध्वजराजश्रीर्मायामोहविभेदिनी ।
महादेवी महारूपा महाभैरवपूजिता ॥ १०६॥

मनुप्रीता मन्त्रमूर्तिर्मन्त्रवश्या महेश्वरी ।
मत्तमातङ्गगमना मधुरा मेरुमण्टपा ॥ १०७॥

महागुप्ता महाभूता महाभयविनाशिनी ।
महाशौर्या मन्त्रिणी च महावैरिविनाशिनी ॥ १०८॥

महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी ।
मही च मण्डलस्था च मधुरागमपूजिता ॥ १०९॥

मेधा मेधाकरी मेध्या माधवी मधुमर्धिनी ।
मन्त्रा मन्त्रमयी मान्या माया माधवमन्त्रिणी ॥ ११०॥

मायादूरा च मायावी मायाज्ञा मानदायिनी ।
मायासङ्कल्पजननी मायामायविनोदिनी ॥ १११॥

माया प्रपञ्चशमनी मायासंहाररूपिणी ।
मायामन्त्रप्रसादा च मायाजनविमोहिनी ॥ ११२॥

महापथा महाभोगा महविघ्नविनाशिनी ।
महानुभावा मन्त्राढ्या महमङ्गलदेवता ॥ ११३॥

हिकाररूपा हृद्या च हितकार्यप्रवर्धिनी ।
हेयोपाधिविनिर्मुक्ता हीनलोकविनाशिनी ॥ ११४॥

ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या ह्रीं देवी ह्रीं स्वभाविनी ।
ह्रीं मन्दिरा हितकरा हृष्टा च ह्रीं कुलोद्भवा ॥ ११५॥

हितप्रज्ञा हितप्रीता हितकारुण्यवर्धिनी ।
हितासिनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा ॥ ११६॥

हिमा हैमवती हैम्नी हेमाचलनिवासिनी ।
हिमागजा हितकरी हितकर्मस्वभाविनी ॥ ११७॥

धीकाररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी ।
धनुर्धरा धराधारा धर्मकर्मफलप्रदा ॥ ११८॥

धर्माचारा धर्मसारा धर्ममध्यनिवासिनी ।
धनुर्विद्या धनुर्वेदा धन्या धूर्तविनाशिनी ॥ ११९॥

धनधान्याधेनुरूपा धनाढ्या धनदायिनी ।
धनेशी धर्मनिरता धर्मराजप्रसादिनी ॥ १२०॥

धर्मस्वरूपा धर्मेशी धर्माधर्मविचारिणी ।
धर्मसूक्ष्मा धर्मगेहा धर्मिष्ठा धर्मगोचरा ॥ १२१॥

योकाररूपा योगेशी योगस्था योगरूपिणी ।
योग्या योगीशवरदा योगमार्गनिवासिनी ॥ १२२॥

योगासनस्था योगेशी योगमायाविलासिनी ।
योगिनी योगरक्ता च योगाङ्गी योगविग्रहा ॥ १२३॥

योगवासा योगभाग्या योगमार्गप्रदर्शिनी ।
योकाररूपा योधाढ्यायोध्री योधसुतत्परा ॥ १२४॥

योगिनी योगिनीसेव्या योगज्ञानप्रबोधिनी ।
योगेश्वरप्राणानाथा योगीश्वरहृदिस्थिता ॥ १२५॥

योगा योगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविधायिनी ।
योगराजेश्वराराध्या योगानन्दस्वरूपिणी ॥ १२६॥

नकाररूपा नादेशी नामपारायणप्रिया ।
नवसिद्धिसमाराध्या नारायणमनोहरी ॥ १२७॥

नारायणी नवाधारा नवब्रह्मार्चितांघ्रिका ।
नगेन्द्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता ॥ १२८॥

नरसिंहार्चितपदा नवबन्धविमोचनी ।
नवग्रहार्चितपदा नवमीपूजनप्रिया ॥ १२९॥

नैमित्तिकार्थफलदा नन्दितारिविनाशिनी ।
नवपीठस्थिता नादा नवर्षिगणसेविता ॥ १३०॥

नवसूत्राविधानज्ञा नैमिशारण्यवासिनी ।
नवचन्दनदिग्धाङ्गी नवकुङ्कमधारिणी ॥ १३१॥

नववस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा ।
नव्यभस्मविदग्धाङ्गी नवचन्द्रकलाधरा ॥ १३२॥

प्रकाररूपा प्राणेशी प्राणसंरक्षणीपरा ।

प्राणसञ्जीविनी प्राच्या प्राणिप्राणप्रबोधिनी ॥ १३३॥

प्रज्ञा प्राज्ञा प्रभापुष्पा प्रतीची प्रभुदा प्रिया ।
प्राचीना प्राणिचित्तस्था प्रभा प्रज्ञानरूपिणी ॥ १३४॥

प्रभातकर्मसन्तुष्टा प्राणायामपरायणा ।
प्रायज्ञा प्रणवा प्राणा प्रवृत्तिः प्रकृतिः परा ॥ १३५॥

प्रबन्धा प्रथमा चैव प्रगा प्रारब्धनाशिनी ।
प्रबोधनिरता प्रेक्ष्या प्रबन्धा प्राणसाक्षिणी ॥ १३६॥

प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षपरमेश्वरी ।
प्रणवाद्यन्तनिलया प्रणवादिः प्रजेश्वरी ॥ १३७॥

चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी ।
चैतन्यचेतनस्था च चतुरा च चमत्कृतिः ॥ १३८॥

चक्रवर्तिकुलाधारा चक्रिणी चक्रधारिणी ।
चित्तचेया चिदानन्दा चिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥ १३९॥

चिन्ताचित्तप्रशमनी चिन्तितार्थफलप्रदा ।
चाम्पेयी चम्पकप्रीता चण्डी चण्डाट्टहासिनी ॥ १४०॥

चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डविनाशिनी ।
चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुरा चिकुरालका ॥ १४१॥

चैतन्यरूपिणी चैत्री चेतना चित्तसाक्षिणी ।
चित्रा चित्रविचित्राङ्गी चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥ १४२॥

चलना चक्रसंस्था च चाम्पेयी चलचित्रिणी ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रकोटिसुशीतला ॥ १४३॥

चन्द्रानुजसमाराध्या चन्द्रा चण्डमहोदरी ।
चर्चितारिश्चन्द्रमाता चन्द्रकान्ता चलेश्वरी ॥ १४४॥

चराचरनिवासी च चक्रपाणिसहोदरी ।
दकाररूपा दत्तश्रीदारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥ १४५॥

दत्तात्रेयस्य वरदा दर्या च दीनवत्सला ।
दक्षाराध्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ १४६॥

दक्षा दाक्षायणी दीक्षा दृष्टा दक्षवरप्रदा ।
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥ १४७॥

दयावती दमस्वान्ता दनुजारिर्दयानिधिः ।
दन्तशोभनिभा देवी दमना दाडिमस्तना ॥ १४८॥

दण्डा च दमयत्री च दण्डिनी दमनप्रिया ।
दण्डकारण्यनिलया दण्डकारिविनाशिनी ॥ १४९॥

दंष्ट्राकरालवदना दण्डशोभा दरोदरी ।
दरिद्रारिष्टशमनी दम्या दमनपूजिता ॥ १५०॥

दानवार्चित पादश्रीर्द्रविणा द्राविणी दया ।
दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥ १५१॥

दात्री दानप्रिया दाम्नी दानश्रीर्द्विजवन्दिता ।
दन्तिगा दण्डिनी दूर्वा दधिदुग्धस्वरूपिणी ॥ १५२॥

दाडिमीबीजसन्दोहा दन्तपङ्क्तिविराजिता ।
दर्पणा दर्पणस्वच्छा द्रुममण्डलवासिनी ॥ १५३॥

दशावतारजननी दशदिग्दैवपूजिता ।
दमा दशदिशा दृश्या दशदासी दयानिधिः ॥ १५४॥

देशकालपरिज्ञाना देशकालविशोधिनी ।
दशम्यादिकलाराध्या दशकालविरोधिनी ।
दशम्यादिकलाराध्य दशग्रीवविरोधिनी ॥ १५५॥

दशापराधशमनी दशवृत्तिफलप्रदा ।
यात्काररूपिणी याज्ञी यादवी यादवार्चिता ॥ १५६॥

ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याजकप्रिया ।
यजमाना यदुप्रीता यामपूजाफलप्रदा ॥ १५७॥

यशस्विनी यमाराध्या यमकन्या यतीश्वरी ।
यमादियोगसन्तुष्टा योगीन्द्रहृदया यमा ॥ १५८॥

यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिसन्नुता ।
यवीयसी युवप्रीता यात्रानन्दा यतीश्वरी ॥ १५९॥

योगप्रिया योगगम्या योगध्येया यथेच्छगा ।
योगप्रिया यज्ञसेनी योगरूपा यथेष्टदा ॥ १६०॥

॥ श्रीगायत्री दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com